इकत्तीस

आत्मिक युद्ध के बारे में आधुनिक परिकल्पना, भाग 2

Modern Myths About Spiritual Warfare, Part 2

अन्य भ्रान्तियों पर विचार करते हुए हम इस अध्याय को जारी रखेंगे, परन्तु शैतान और आत्मिक युद्ध की शिक्षाओं के संबंध में अन्त में हम इस पर विचार करेंगे कि पवित्रशास्त्र आत्मिक युद्ध के बारे में वास्तव में क्या कहता है जिसका पालन प्रत्येक विश्वासी को करना चाहिए।

पुराण कथा # 5 : ''आत्मिक युद्ध के द्वारा हम वातावरण में से शैतानी गढ़ों को ढा सकते हैं।''

Myth #5: "We can pull down demonic strongholds in the atmosphere through spiritual warfare."

पवित्रशास्त्र के अनुसार, निस्संदेह शैतान दुष्टात्माओं के उन अधिकारी वर्ग पर शासन करता है जो पृथ्वी के वातावरण में रहती हैं तथा जो अंधकार के राज्य में शासन करने में उसकी सहायता करती हैं। ये दुष्टात्माएं ''क्षेत्रीय'' हैं, जो निश्चित भौगोलिक क्षेत्रों पर शासन करती हैं, यह बाइबल में पाया जाने वाला विषय भी है (देखें दानि. 10:13, 20-21; मर. 5:9-10)। मसीहियों का दूसरे लोगों में से दुष्टात्माओं को बाहर निकालने का अधिकार और दुष्टात्माओं का सामना करना पवित्रशास्त्र के अनुसार है (देखें मर. 16:17; याकू. 4:7; 1पत. 5-8-9)। लेकिन क्या मसीही शहरों में से दुष्टात्माओं को निकाल सकते हैं? जवाब है कि वे ऐसा नहीं कर सकते, और ऐसा करना उनके लिये समय की बर्बादी ही होगा।

लोगों में से दुष्टात्माओं को निकाल लेने पर हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि हम शहरों में से भी दुष्टात्माओं को निकाल सकते हैं। सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक में लोगों में से दुष्टात्माओं के निकाले जाने के असंख्य उदाहरण हैं; लेकिन क्या आप सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक में एक भी ऐसे उदाहरण को बता सकते हैं जहां किसी ने एक शहर या भौगोलिक क्षेत्र पर शासन करनेवाली दुष्ट आत्मा को निकाला हो? आप ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि यहां ऐसा कोई उदाहरण नहीं है। क्या आप पत्रियों में हमें दिये गए किसी ऐसे निर्देश पर विचार कर सकते हैं, जिसमें वातावरण में से दुष्टात्माओं के निकालने का उत्तरदायित्व हम पर हो? नहीं, क्योंकि वहां ऐसा कोई उदाहरण नहीं है। इसी कारण हमारे पास यह विश्वास करने का कोई बाइबल संबन्धी आधार नहीं है कि हम वातावरण में दुष्टात्माओं के विरुद्ध ''आत्मिक युद्ध'' में हो सकते हैं या हमें इसमें होना चाहिए।

दृष्टांतों को बहुत दूर धकेलना
Pushing Parables Too Far

पवित्रशास्त्र को अलंकारिक भाषा में पढ़ते समय मसीही लोग उसके कई अर्थ लगाने की गलती करते हैं। अलंकारिक भाषा के कई अर्थ लगाने का उदाहरण पौलुस द्वारा ''दृढ़ गढ़ों'' को ढा देने के शब्दों में मिलता है:

> क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते, क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। सो हम कल्पनाओं को और हर एक ऊँची बात को जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं। और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञा मानना पूरा हो जाए, तो हर प्रकार के आज्ञा न मानने का पलटा लें (2कुरि. 10:3-6)।

किंग जेम्स संस्करण ''गढ़ों को ढा देने'' के स्थान पर कहता है ''हम निराधार कल्पना का नाश कर रहे हैं'' इस एक अलंकारिक वाक्यांश से वातावरण में पाई जाने वाली बुरी आत्माओं के ''गढ़ों को ढा देने'' के लिये ''आत्मिक युद्ध'' वाले विचार की सुरक्षा या बचाव के लिये विशिष्ट रूप से एक थियोलोजी को बनाया गया है। परन्तु चूंकि *न्यू अमेरिकन स्टैण्डर्ड वर्जन* स्पष्ट रूप से बताता है, पौलुस वातावरण में पाई जानेवाली बुरी आत्माओं के बारे में नहीं बोल रहा है, बल्कि लोगों के मनों में पाई जाने वाली झूठी मान्यताओं के गढ़ों के बारे में। पौलुस ऊँचे स्थानों पर पाई जाने वाली बुरी आत्माओं का नहीं, बल्कि *निराधार कल्पना* का नाश कर रहा था।

संदर्भ के साथ पढ़ने पर यह हमारे लिये और भी स्पष्ट हो जाता है। पौलुस

ने कहा ''सो हम निराधार कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को जो *परमेश्वर की पहचान* के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं, और हर एक *भावना* को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं'' (पर बल दिया गया है)। जिस लड़ाई को पौलुस प्रतीक के रूप में लिखता है वह उन भावनाओं और विचारों के विरुद्ध होने वाली लड़ाई है, जो परमेश्वर की सच्ची पहचान (ज्ञान) के विरोध में है।

सैन्य अलंकारों का प्रयोग करते हुए पौलुस स्पष्ट करता है कि हम एक ऐसे युद्ध में हैं जो उन लोगों के मनों से है जो शैतान की झूठी मान्यता पर भरोसा करते हैं। इस लड़ाई में हमारा प्राथमिक हथियार सत्य है, इसी कारण हमें समस्त संसार में जाकर सुसमाचार प्रचार करने की आज्ञा दी गई है, शत्रु के क्षेत्र पर उस संदेश के साथ हमला करते हुए जो बंधुओं को आज़ाद कर सके। जिन गढ़ों को हम ढा रहे हैं वे धोखे के गारे से झूठ की ईंटों को जोड़े हुए हैं।

परमेश्वर के समस्त हथियार

The Whole Armor of God

इफिसियों 6:10-17 में पौलुस द्वारा लिखित एक अन्य परिच्छेद का प्राय: गलत अर्थ लगाया जाता है, जहां उसने हमारे द्वारा परमेश्वर के हथियारों को धारण किये जाने के बारे में लिखा है। यह परिच्छेद यद्यपि पूरी तरह से एक मसीही के दुष्ट और उसकी बुरी आत्माओं के साथ संघर्ष के बारे में है, तौभी यहां नगर से बुरी आत्माओं को निकालने का वर्णन नहीं मिलता है। परिच्छेद का निकटता से अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि पौलुस प्राथमिक रूप से प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपने व्यक्तिगत जीवन में परमेश्वर के वचन के सत्य को लागू करते हुए शैतान की युक्तियों का सामना करने के उत्तरदायित्व के बारे में लिखता है।

इस परिच्छेद को पढ़ने परे हमें प्रमाणिक अलंकारिक भाषा पर भी ध्यान देना है। पौलुस निश्चय ही मसीहियों द्वारा अपने शरीर पर भौतिक शस्त्रों को धारण करने के बारे में नहीं लिख रहा था। इसके विपरीत, उसके द्वारा लिखे गए हथियार प्रतीकात्मक थे। ये हथियार उन असंख्य पवित्रशास्त्र की सच्चाइयों को प्रस्तुत करते हैं जिनका प्रयोग मसीहियों को दुष्ट और बुरी आत्माओं के विरुद्ध सुरक्षा के लिए करना चाहिए। परमेश्वर के वचन को जानने, उस पर भरोसा करने और कार्य करने के द्वारा यदि प्रतीकात्मक रूप से कहा जाए तो मसीही परमेश्वर के सुरक्षात्मक हथियारों को धारण किये हैं।

आइये इफिसियों के इस परिच्छेद का अध्ययन एक-एक पद के द्वारा करते हुए करें, स्वयं से यह प्रश्न करते हुए कि *पौलुस वास्तव में हमें क्या बताने का प्रयास कर रहा था?*

हमारे आत्मिक बल का स्रोत

The Source of Our Spiritual Strength

सर्वप्रथम हमें, ''प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त'' बनने को कहा गया है (इफि 6:10)। बल इस सच्चाई पर दिया गया है कि हमें अपने बल को स्वयं की ओर से *नहीं* बल्कि परमेश्वर से प्राप्त करना चाहिए। इसे पौलुस के अगले कथन में रखा गया है: ''परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो'' (इफि. 6:11अ)। ये *परमेश्वर के* शस्त्र हैं न कि हमारे। पौलुस यह नहीं कह रहा है कि परमेश्वर स्वयं शस्त्र धारण करता है, बल्कि यह है कि हमें परमेश्वर द्वारा दिये जाने वाले शास्त्रों को धारण करना है।

हमें परमेश्वर द्वारा दिये जाने वाले इन शास्त्रों की ज़रूरत क्यों है? जवाब है, ''कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको'' (इफि. 6:11ब)।

शस्त्र प्राथमिक रूप में बचाव करने के हैं न कि आक्रामक प्रयोग के लिए। यह ऐसा नहीं है कि हम जाकर नगर से बुरी आत्माओं को निकाल सकें, यह ऐसा है कि हम शैतान की *युक्तियों के विरुद्ध दृढ़ता से खड़े* रह सकें।

हमने जाना कि हम पर हमला करने की बुरी युक्ति शैतान की है, और परमेश्वर द्वारा उपलब्ध हथियारों को धारण न करने पर हम सुरक्षित नहीं हैं। ध्यान दें कि यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हथियारों को धारण करें; न कि परमेश्वर का।

आइये आगे देखते हैं:

> क्योंकि हमारा यह मल्ल युद्ध लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों और अधिकारियों से और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं (इफि. 6:12)।

यहां यह पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है कि पौलुस एक शारीरिक व भौतिक युद्ध के बारे में नहीं बोल रहा है बल्कि आत्मिक युद्ध के बारे में। हम पौलुस द्वारा सूचीगत असंख्य वर्ग की बुरी आत्माओं के विरुद्ध संघर्षरत् हैं। अधिकांश पाठकों का मानना है कि पौलुस ने नीचे से ऊपर तक की ''अधिकारी'' बुरी आत्माओं को निम्न वर्ग में सूचीगत किया है और आकाश की दुष्ट आत्मिक सेना को उच्च वर्ग के रूप में।

हम आत्मिक के विरुद्ध कैसे लड़ सकते हैं? इस प्रश्न का जवाब यह पूछने के द्वारा दिया जा सकता, ''आत्मिक जन हम पर कैसे हमला कर सकते हैं?'' वे हम पर उन परीक्षाओं, विचारों, सुझावों और बातों के द्वारा हमला करते हैं जो परमेश्वर के वचन और इच्छा के विरोध में होते हैं। इसी कारण हमारा बचाव परमेश्वर के वचन को जानने, विश्वास करने और आज्ञा मानने में है।

> इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको (इफि. 6:13)।

एक बार पुन: ध्यान दें कि पौलुस का उद्देश्य हमें शैतान के प्रहारों के विरुद्ध *सामना* करने और *खड़े* रहने को तैयार करने का है। उसका उद्देश्य यह नहीं कि हम जाकर शैतान पर हमला करें और वातावरण में से बुरी आत्माओं को निकालें। इस परिच्छेद में पौलुस हमें तीन बार *स्थिर* रहने को कहता है। हमारी स्थिति बचाव करने की है न कि हमला करने की।

सत्य हमारा प्राथमिक बचाव
Truth-Our Primary Defense

> सो सत्य से अपनी कमर कसकर (इफि. 6:14 अ)।

हमारा पहला हथियार सत्य है। सत्य क्या है? यीशु ने अपने पिता से कहा, ''तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)। हम सत्य को जाने बिना शैतान के विरुद्ध सफलता के साथ स्थिर नहीं रह सकते हैं। यीशु ने जंगल में अपनी परीक्षा के समय में यह कहने के द्वारा ''ऐसा लिखा है'' इसको सुन्दरता के साथ प्रस्तुत किया।

पौलुस आगे कहता है

> और धार्मिकता की झिलम पहनकर (इफि 6:14ब)

मसीही होने के कारण, हमें दो तरह की धार्मिकता के बारे में जानना चाहिए। सर्वप्रथम, हमें मसीह की धार्मिकता को एक दान के रूप में दिया गया है (देखें 2 कुरि. 5:21)। उसकी धार्मिकता को उन्हें प्रदान किया गया है जो यीशु पर विश्वास करते हैं, जिसने क्रूस पर उनके पापों को उठाया। यह धार्मिकता हमें शैतान के प्रभुत्व से छुड़ाती है।

दूसरा, हमें यीशु की आज्ञा का पालन करते हुए धार्मिकता के साथ जीवन बिताना चाहिए और यही धार्मिकता की झिलम के बारे में कहते हुए पौलुस के मन में था। मसीह की आज्ञा का पालन करने के द्वारा हम शैतान को कोई स्थान नहीं देते हैं (देखें इफि. 4:26-27)।

सुसमाचार के जूतों को मज़बूती से पहनना
Firm Footing in Gospel Shoes

> और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिनकर (इफि. 6:15)।

सुसमाचार के सत्य को जानना, उस पर विश्वास करना व कार्य करना हमें शैतान की युक्तियों के विरुद्ध दृढ़ता से खड़ा करता है। रोमी सिपाहियों द्वारा पहने जानेवाले जूतें नीचे से नुकीले होते थे, जो युद्ध के मैदान में उन्हें एक मज़बूती देते थे। जब यीशु हमारा प्रभु है तो हम शैतान के झूठ के विरुद्ध दृढ़ता से खड़े रहें हैं।

> और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको (इफि. 6:16)।

पुन: ध्यान दें कि पौलुस का बल बचाव अवस्था पर है। वह नगर से दुष्ट आत्माओं को निकालने के बारे में नहीं कह रहा है। वह शैतान के झूठ का सामना करने को हमें परमेश्वर के वचन का प्रयोग करने को कह रहा है। जब हम उस पर विश्वास व कार्य करते हैं जो परमेश्वर ने कहा तो यह शैतान के झूठ के विरुद्ध एक बचाव करनेवाली के लिए ढाल का प्रयोग करने के सामन होता है, जो प्रतीकात्मक रूप में ''दुष्ट के सब जलते तीरों को बुझाने के लिए मिसाईल के रूप में कार्य करती है।''

हमारी आत्मिक तलवार – परमेश्वर का वचन

Our Spiritual Sword-God's Word

> और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो (इफि. 6:17)।

बाइबल के अनुसार, उद्धार में शैतान से हमारा छुटकारा भी शामिल है। परमेश्वर ने ''हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' है (कुलु. 1:13)। यह जानते हुए कि यह उस टोप के समान है जो हमारे मनों की शैतान के झूठ पर भरोसा करने से सुरक्षा करता है कि हम अभी भी उसके अधिकार में हैं शैतान अब हमारा स्वामी नहीं है–यीशु है।

इसके अतिरिक्त हमें ''आत्मा की तलवार'' को लेना है, जो कि पौलुस के अनुसार प्रतीकात्मक रूप में परमेश्वर का वचन है। जैसा मैंने पहले भी बताया, यीशु–आत्मिक योद्धा, का एक सिद्ध नमूना है जिसने निपुणता के साथ अपनी तलवार को धारण किया है। इसी तरह से, यदि हमें भी आत्मिक क्षेत्र में शैतान को परास्त करना है, तो हमें परमेश्वर द्वारा कही गई बातों को जानना और उन पर विश्वास करना है, नहीं तो हम उसके झूठ में फंस जाएंगे।

इस पर भी ध्यान दें कि *यीशु* ने ''आत्मा की तलवार'' का प्रयोग *सुरक्षात्मक* रूप में किया। कुछ हमारी ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि पौलुस द्वारा लिखे गए हथियार सुरक्षा के हैं और वे अपने इस निर्बल तर्क के साथ यह प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं कि इफिसियों 6:10-12 के आधार पर उनकी थियोरी सुरक्षात्मक रूप से ''स्वर्गीय स्थानों में से बुरी आत्माओं के गढ़ों को ढा देने'' पर लागू होती है।

निस्संदेह पौलुस द्वारा यह कारण देने पर कि मसीहियों को परमेश्वर के हथियारों को क्यों धारण करना चाहिए कि हो सकता है वे ''दुष्ट की युक्तियों के विरुद्ध दृढ़ता से खड़े'' हों)। हम जानते हैं कि वह हथियार के प्राथमिक रूप में सुरक्षात्मक प्रयोग के बारे में लिख रहा है। इसके अतिरिक्त, एक तलवार को सुरक्षात्मक हथियार के रूप में जाना जा सकता है, क्योंकि यह विरोधी द्वारा तलवार के घोंपे जाने से सुरक्षा देती और उसे रोकती है।

इसके अतिरिक्त, हमें सावधान रहना चाहिए कि हम सारे अलंकार का निचोड़ निकालें, जबकि हम हथियारों के महत्व को जानने का प्रयास कर रहे हैं। जब हम एक तलवार के सुरक्षात्मक व प्रहार करने वाले स्वभाव पर तर्क देना आरम्भ करते हैं तो मानो हम ''दृष्टांत को बहुत दूर धकेल'' रहे होते हैं, जबकि हम एक सरल अलंकार को टुकड़े-टुकड़े कर रहे होते हैं जिसका उद्देश्य कभी भी विच्छेदन करने का नहीं था।

लेकिन क्या यीशु ने हमें ''बलवन्त पुरुष को बांधने'' का निर्देश नहीं दिया?

But Didn't Jesus Instruct Us to "Bind the Strong Man"?

सुसमाचार में तीन बार हम यीशु को ''बलवन्त पुरुष को बांधे जाने'' का वर्णन करते हुए पाते हैं। तौभी, इन तीनों में से किसी में भी उसने अपने शिष्यों को यह नहीं बताया कि ''बलवन्त पुरुष को बांधने'' पर उन्हें कार्य करना चाहिए। आइये, जो कुछ यीशु ने कहा उसकी स्पष्ट रूप में जांच करें, और संदर्भ में जो कुछ उसने कहा उसे पढ़ें:

> और शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे, यह कहते थे कि ''उसमें शैतान है, और यह भी, कि वह दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।'' और वह उन्हें पास बुलाकर, उनसे दृष्टांतों में कहने लगा; ''शैतान क्योंकर शैतान को निकाल सकता है? और यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य क्योंकर स्थिर रह सकता है? और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर क्योंकर स्थिर रह सकेगा? और यदि शैतान अपना ही विरोधी होकर अपने में फूट डाले, तो वह क्योंकर बना रह सकता है? उसका तो अन्त ही हो जाता है। *किन्तु कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट नहीं सकता, जब तक कि वह पहले उस बलवन्त को न बान्ध ले; और तब उसके घर को लूट लेगा।* मैं तुम से सच कहता हूं कि मनुष्यों की सन्तान के सब पाप और निन्दा जो वे करते हें, क्षमा की जाएगी। परन्तु जो

> कोई पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करे, वह कभी भी क्षमा न किया जाएगा: वरन् वह अनन्त पाप का अपराधी ठहरता है।'' क्योंकि वे यह कहते थे, कि उसमें अशुद्ध आत्मा है (मर. 3:22-30, पर बल दिया गया है)।

ध्यान दें कि यीशु अपने शिष्यों को बलवन्त व्यक्तियों को बांधने के विषय में नहीं सिखा रहा था। इसके विपरीत, वह यरूशलेम के शास्त्रियों की आलोचना का जवाब अविवादित तर्क और स्पष्ट अलंकार के साथ दे रहा था।

उन्होंने उस पर शैतानी शक्ति की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालने का दोष लगाया था। उसने उन्हें यह कहते हुए जवाब दिया कि शैतान यदि अपने विरोध में कार्य करे तो वह मूर्ख है। कोई भी बुद्धिमानी के साथ इस पर तर्क नहीं कर सकता।

यदि दुष्टात्माओं को निकालने के लिये यीशु ने शैतानी शक्तियों का प्रयोग नहीं किया था तो वह किस शक्ति का प्रयोग कर रहा था? यह शक्ति अवश्य ही शैतानी शक्ति से अधिक शक्तिशाली रही होगी। यह परमेश्वर के सामर्थ-पवित्र आत्मा-की शक्ति ही होगी। शैतान के बारे में यीशु अलंकारिक रूप में बोला, उसकी तुलना एक ऐसे व्यक्ति के रूप में करते हुए जो अपनी सम्पत्ति की सुरक्षा कर रहा हो। उस बलवन्त व्यक्ति की सम्पत्ति को उससे लेने वाला व्यक्ति उससे अधिक बलवान होना चाहिए जो वह (यीशु) स्वयं है। दुष्टात्माओं को उसके द्वारा निकाले जाने की यह स्पष्ट व्याख्या है।

बलवन्त व्यक्ति के विषय में बताने वाला यह परिच्छेद जो कि लूका और मत्ती में पाया जाता है, नगरों पर ''बलवन्त मनुष्यों'' को हमारे द्वारा बांधे जाने को उचित नहीं ठहराता। इसके अतिरिक्त, शेष नये नियम की जांच करने पर, हम नगरों पर ''बलवन्त पुरुषों'' को किसी के भी द्वारा बांधे जाने के उदाहरण को कहीं भी नहीं पढ़ते या फिर इसके बारे में दिये गए किसी निर्देश को। अत:, हम सुरक्षित रूप में यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि किसी भी मसीही के लिये किसी नगर का भौगोलिक क्षेत्र से ''बलवन्त-पुरुष वाली बुरी आत्माओं'' को बांधने का प्रयास पवित्रशास्त्र के अन्तर्गत नहीं आता।

''पृथ्वी और स्वर्ग पर बांधे जाने'' का क्या अर्थ है?

What About "Binding on Earth and in Heaven"?

सुसमाचार में हम केवल दो ही बार यीशु के इन शब्दों को पाते हैं, ''जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा (बांधा गया है), और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा (खोला गया है)।'' दोनों का ही वर्णन मत्ती के सुसमाचार में मिलता है।

क्या यीशु हमें यह सिखा रहा था कि हम वातावरण में से दुष्ट आत्माओं को ''बांध'' सकते हैं या हमें उन्हें बांधना चाहिए?

सर्वप्रथम, आइये उसके शब्दों पर विचार करें, *बान्धना* और *खोलना।* यीशु द्वारा इन शब्दों का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप से किया गया है, क्योंकि उसका अर्थ निश्चय ही यह नहीं था कि उसके अनुयायी रस्सी या छड़ को लेकर किसी भी चीज़ को बांधे या खोलें। अत: फिर यीशु का क्या अर्थ था?

जवाब प्राप्त करने के लिये, हमें उसके द्वारा *बांधने* और *खोलने* शब्दों को उस समय के संदर्भ में प्रयोग करने के बारे में देखना चाहिए। क्या वह दुष्ट आत्माओं के विषय में बोल रहा था? यदि ऐसा है तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उसके द्वारा बांधे जाने का कार्य बुरी आत्माओं के बान्धे जाने के लिए है।

आइये उस प्रथम परिच्छेद की जांच करें जहां यीशु ने बान्धने और खोलने के बारे में बताया है:

> उसने (यीशु) उनसे कहा; ''परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?'' शमौन पतरस ने उत्तर दिया कि, ''तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।'' यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि ''हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं; परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। और मैं तुझसे कहता हूं कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग की कुंजियां दूंगा: और *जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा''* (मत्ती 16:15-19, पर बल दिया गया है)।

इसमें कोई संदेह नहीं कि इस परिच्छेद का अर्थ कई तरह से बताया गया है जिस कारण इसमें पांच अलंकारिक अभिव्यक्तियां पाई जाती हैं (1) ''मांस और लोहू'' (2) ''पत्थर'' (3) अधोलोक के फाटक'', (4) ''स्वर्ग के राज्य की कुंजियां'' (5) ''बान्धना/खोलना'। ये सभी अभिव्यक्तियां, किसी और चीज़ के बारे में बताते हुए प्रतीकात्मक हैं।

अधोलोक के फाटक

Hades' Gates

अलंकारों के स्पष्ट अर्थ के बावजूद आप देख सकते हैं कि, इस परिच्छेद में, यीशु ने दुष्ट आत्माओं के बारे में नहीं बताया है। उसने ''अधोलोक के फाटक'' के बारे में बताया है, जो प्रतीकात्मक है, क्योंकि कलीसिया को रोकने के लिए अधोलोक के फाटक कुछ नहीं कर सकते।

''अधोलोक के फाटक'' किसे प्रस्तुत करते हैं? शायद यह शैतान की शक्ति के प्रतीक हैं और यीशु का अर्थ था कि शैतान की शक्ति उसकी कलीसिया के निर्माण को नहीं रोक सकेगी। या, फिर यीशु का अभिप्राय यह था कि जिस कलीसिया का निर्माण वह करेगा वह उन्हें अधोलोक के फाटक में बन्दी होने से बचाएगी।

इस पर ध्यान दें कि यीशु ने वास्तव में दो तरह के द्वारों का उल्लेख किया है: अधोलोक के फाटक और स्वर्ग के फाटक, पतरस को ''स्वर्ग के राज्य की कुंजियां'' देने के द्वारा। यह तुलना इस विचार का समर्थन करती है कि अधोलोक के फाटकों के बारे में यीशु का उल्लेख लोगों को अधोलोक के फाटक में जाने से बचाने की कलीसिया की भूमिका को बताता है।

जबकि यीशु का अभिप्राय यह था कि ''शैतान की सारी शक्तियां भी उसकी कलीसिया को रोक नहीं सकेंगी'' तो हम इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकते कि बान्धने और खोलने के संदर्भ में उसके निर्देश नगरों पर से बुरी आत्माओं के बान्धने के विषय में होने चाहिए। इसका सरल सा कारण यह है कि हम सुसमाचार या प्रेरितों के काम में कहीं भी नगरों पर से दुष्टात्माओं को बांधे जाने के बारे में नहीं पढ़ते, न ही हम पत्रियों में इस तरह की किसी चीज़ के करने का निर्देश पाते हैं। तथा बान्धने और खोलने के संबंध में यीशु के शब्दों का अर्थ लगाते हुए हमारी व्याख्या शेष नये नियम के संदर्भ के समर्थन में होनी चाहिए।

किसी भी पवित्रशास्त्र के उदाहरण की अनुपस्थिति में यह कितना अजीब लगता है कि मसीही प्राय: इस तरह से कहते हैं, ''मैं यीशु के नाम में दुष्ट को बान्धता हूं'' या ''अमुक व्यक्ति पर स्वर्गदूतों को खोलता हूं'' इत्यादि। आप नये नियम में किसी को भी इस तरह से कहते हुए नहीं पाते हैं। प्रेरितों के काम और पत्रियों में बल दुष्ट से बोलने या दुष्टात्माओं को बांधने या खोलने पर नहीं है, बल्कि सुसमाचार का प्रचार करने और परमेश्वर से प्रार्थना करने पर है। उदाहरण के लिए, जब पौलुस को शैतान के एक दूत द्वारा लगातार घूंसे मारे जा रहे थे तो उसने 'बांधने' का प्रयास नहीं किया। इस विषय में उसने परमेश्वर से प्रार्थना की (देखें 2 कुरि. 12:7-10)।

स्वर्ग की कुंजियाँ

The Keys to Heaven

आइये बान्धने और खोलने के बारे में यीशु के तात्कालिक शब्दों के संदर्भ को एक बार फिर से देखें। ध्यान दें कि प्रत्यक्ष रूप से बान्धने और खोलने का वर्णन करने से पूर्व यीशु ने कहा कि वह पतरस को ''स्वर्ग राज्य की कुंजियां'' देगा। पतरस को कभी भी अक्षरश: स्वर्ग की कुंजियों को नहीं दिया गया था, इसी कारण यीशु के शब्द अवश्य ही प्रतीकात्मक रहे होंगे। ''कुंजियां'' किसे प्रस्तुत करती हैं? कुंजियां *किसी बन्द चीज़ को खोलने वाले माध्यम* को प्रस्तुत करती हैं। यदि किसी के पास

कुंजियां है तो इसका अर्थ यह हुआ कि बन्द द्वारों को उसके अलावा और कोई नहीं खोल सकता।

प्रेरितों के काम पुस्तक में वर्णित पतरस की सेवकाई पर विचार करने पर क्या हम उसे ऐसा कुछ करता पाते हैं जिसकी तुलना उन द्वारों को खोलने से की जा सके जिसे दूसरों के लिए बन्द किया है?

सर्वप्रथम, हम उसे सुसमाचार की घोषणा करते हुए पाते हैं, वह सुसमाचार जो सभी विश्वास करनेवालों के लिए स्वर्ग के द्वार को खोलता है (और वह सुसमाचार जो अधोलोक के फाटकों को बन्द करता है)। इस तरह से हम सभी को स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दी गई हैं, क्योंकि हम सभी मसीह के राजदूत हैं । *स्वर्ग के राज्य की कुंजियां केवल यीशु मसीह का सुसमाचार हो सकती हैं, वह संदेश जो स्वर्ग के फाटकों को खोलता है।*

और अब, बान्धना व खोलना

And Now, Binding and Loosing

अन्त में, पतरस को स्वर्ग के राज्य की कुंजियां देने की प्रतिज्ञा करने के पश्चात्, यीशु ने बान्धने और खोलने के बारे में कहा, विचाराधीन परिच्छेद में जो यीशु की पांचवी प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है।

कथन के संदर्भ में हम पहले ही जांच कर चुके हैं कि यीशु का इससे क्या अभिप्राय था? पतरस द्वारा बान्धा और खोला जाना, लोगों को अधोलोक से बचाने और सुसमाचार की घोषणा करने को यीशु की कलीसिया के निर्माण पर कैसे लागू होता है?

इसकी केवल एक ही संभावना है। यीशु का केवल इतना अर्थ था, ''मैं तुझे स्वर्ग का प्रतिनिधि ठहराता हूं। पृथ्वी और स्वर्ग पर के अपने उत्तरदायित्व को पूरा कर।''

यदि एक स्वामी अपने सेल्समैन से कहे, ''बैंकॉक में जो कुछ भी तुम करते हो वही तुम्हारे गृह कार्यालय में भी किया गया हो'' तो वह सेल्समैन अपने स्वामी के शब्दों का क्या अर्थ निकालेगा? वह इसका अर्थ यह निकालेगा कि वह उसे बैंकोक में अपनी कंपनी का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार दे रहा है। इस सब से यीशु का अभिप्राय यह था कि पतरस को पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार दिया गया है। पतरस को दी गई इस प्रतिज्ञा ने उसके भरोसे को उस समय पुष्ट किया होगा जब उसने यरूशलेम में फरीसियों और शास्त्रियों-वे लोग जो कि स्वयं को परमेश्वर का प्रतिनिधि मानते थे, की आलोचना के बावजूद परमेश्वर के संदेश की घोषणा करना आरम्भ किया था।

यीशु के शब्दों की यह विशिष्ट व्याख्या उसके द्वारा इसी अभिव्यक्ति का दूसरी

बार प्रयोग किये जाने से मेल खाती है, जो मत्ती के सुसमाचार में प्रथम परिच्छेद के दो अध्यायों के बाद मिलती है:

> यदि तेरा भाई अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा, यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया। और यदि वह न सुने तो और एक दो जन को अपने साथ ले जा कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाए। यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने, तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेनेवाले के ऐसा जान। मैं तुमसे सच कहता हूं *जो कुछ तुम पृथ्वी पर बान्धोगे वह स्वर्ग में बन्धेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।* फिर मैं तुम से कहता हूं यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिये, जिसे वे मांगें, एक मन के हों, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उनके लिये हो जाएगी। क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं। वहां मैं उनके बीच में होता हूं। (मत्ती 18:15-20 पर बल दिया गया है)।

इस दूसरे परिच्छेद में जो कि बान्धने और खोलने के बारे में बताता है, निस्संदेह विषय-वस्तु में ऐसा कुछ *नहीं* है जिससे हम यह विश्वास कर सकें कि यीशु दुष्ट आत्माओं को बान्धने के बारे में बोल रहा था। यहां यीशु कलीसियाई अनुशासन के विषय पर बोलने के पश्चात् प्रत्यक्ष रूप से बान्धने और खोलने के बारे में बोला।

इससे ऐसा प्रतीत होता है कि इस परिच्छेद में बान्धने और खोलने के संदर्भ में, यीशु का अभिप्राय कुछ ऐसा था, ''मैं *तुझे* यह निर्धारित करने का उत्तरदायित्व दे रहा हूं कि कलीसिया में कौन होना चाहिए और कौन नहीं। यह तेरा कार्य है। अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करने पर, स्वर्ग तुझे ऊपर ले लेगा।''

एक विस्तृत कार्यरूप में, यीशु सरल रूप में कह रहा था, ''तुझे पृथ्वी पर स्वर्ग का प्रतिनिधि ठहराया गया है। तेरी कुछ ज़िम्मेदारियां हैं, और पृथ्वी पर अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने पर, स्वर्ग सदैव तेरा समर्थन करता रहेगा।''

संदर्भ के अन्तर्गत बान्धना और खोलना

Binding and Loosing in Context

यह व्याख्या तात्कालिक संदर्भ के साथ-साथ शेष नये नियम के विस्तृत संदर्भ पर भी सही बैठती है।

तात्कालिक संदर्भ के संबंध में, हम ध्यान दें कि अपने खोलने और बान्धने के कथन

के पश्चात् यीशु ने कहा: ''फिर मैं तुम से कहता हूं, यदि तुम में से दो जन *पृथ्वी पर* किसी बात के लिये, जिसे वे मांगें, एक मन के हों, तो वह मेरे पिता की ओर से जो *स्वर्ग में* है उनके लिये हो जाएगी। (मत्ती 18:19, पर बल दिया गया है)।

पुन: विषय है, ''जो कुछ तुम पृथ्वी पर करोगे उसका समर्थन स्वर्ग में किया जाएगा।'' हम पृथ्वी पर प्रार्थना करने को ठहराए गए व इसके लिए उत्तरदायी हैं। हमारे ऐसा करने पर स्वर्ग जवाब देगा। यीशु के शब्द, ''*फिर* मैं तुम से कहता हूं'' ऐसा संकेत करते हुए प्रतीत होते हैं कि वह बान्धने और खोलने के संबंध में अपने पहले के कथन को विस्तृत कर रहा था।

इस परिच्छेद में यीशु का अन्तिम कथन, ''क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं'' ''स्वर्ग के खोले जाने'' के विषय की पुष्टि करता है। जब विश्वासी उसके नाम में इकट्ठे होते हैं, तब स्वर्ग में रहने वाला दिखता है।

यदि आप विचाराधीन परिच्छेद में मेरे द्वारा की जाने वाली व्याख्या से असहमत हैं तो इसका अर्थ यह हुआ कि आप यह मानते हैं कि यीशु नगरों पर से दुष्टात्माओं को बान्धने के बारे में बोल रहा था।

परमेश्वर की ईश्वरीय योजना में शैतान भी शामिल है

God's Divine Plan Includes Satan

शैतान और उसके दूत एक विद्रोही सेना हैं, लेकिन यह एक ऐसी सेना नहीं है जिस पर परमेश्वर का नियंत्रण न हो, इस विद्रोही सेना को *परमेश्वर ने बनाया था,* (बेशक बनाए जाने के समय में वे विद्रोही नहीं थे)। पौलुस ने लिखा:

> क्योंकि उसी में (मसीह में) सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, *स्वर्ग की हो* अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या *सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार* सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं (कुलु 1:16, पर बल दिया गया है)।

यीशु ने प्रत्येक वर्ग के दूत को बनाया, जिसमें शैतान भी है। क्या वह जानता था कि विद्रोह होगा? बेशक! फिर उसने उनकी सृष्टि क्यों की? क्योंकि उसे उन विद्रोही आत्माओं का प्रयोग अपनी योजना को पूरा करने के लिये करना था। यदि उसका उनके लिये कोई उद्देश्य नहीं था, तो उसने उन्हें बन्दी बना लिया होता, जैसा हमें बताया गया है कि उसने विद्रोह करने वाले कुछ दूतों के साथ ऐसा पहले भी किया है (2पत. 2:4) और जैसा वह एक दिन शैतान के साथ करेगा (देखें प्रका. 20:2)।

पृथ्वी पर शैतान और प्रत्येक बुरी आत्मा को कार्य करने की अनुमति देने के पीछे परमेश्वर के पास एक कारण है। यदि वह ऐसा न करे तो उनका कोई कार्य नहीं

है। पृथ्वी पर शैतान को कार्य करने देने की अनुमति के पीछे परमेश्वर का क्या कारण है? मैं नहीं सोचता कि हर कोई कारण को समझ सकता है, तौभी, परमेश्वर ने अपने वचन में कुछ कारणों को प्रगट किया है।

सर्वप्रथम, परमेश्वर पृथ्वी पर मनुष्यों की परीक्षा लेने की अनुमति शैतान को सीमित रूप में देता है। लोग चाहे यह जानें या न जानें वे या तो शैतान के हैं या फिर परमेश्वर के। परमेश्वर ने शैतान को आदम व हव्वा की परीक्षा लेने की अनुमति दी, दो लोग जिन्हें परमेश्वर प्रदत्त स्वतंत्र इच्छा दी गई थी कि वह उनकी परीक्षा ले। स्वतंत्र इच्छा के साथ यह प्रगट करने को परीक्षा ली गई कि उनके मनों में क्या है– आज्ञाकारिता या अनाज्ञाकारिता।[92]

दूसरा, परमेश्वर पृथ्वी पर बुरे काम करनेवालों पर अपने क्रोध के दूत के रूप में शैतान को सीमित रूप में कार्य करने देता है। इसे मैं पहले ही पवित्रशास्त्र के कई उदाहरणों से स्पष्ट कर चुका हूं, जब परमेश्वर कुछ लोगों पर बुरी आत्माओं को भेजने के द्वारा अपने न्याय को लेकर आया। इस सच्चाई के आधार पर कि परमेश्वर उद्धार पाए न लोगों पर शैतान को प्रभुत्व देता है, यह उन पर उसके क्रोध का एक संकेत है। परमेश्वर बुरे लोगों का न्याय उन पर बुरे लोगों के प्रभुत्व करने के द्वारा करता है, और दुष्ट आत्मिक प्राणियों द्वारा प्रभुत्व करने पर भी, जिससे उनका जीवन शोचनीय हो सके।

तीसरा, परमेश्वर पृथ्वी पर स्वयं को महिमा देने के लिए शैतान को सीमित रूप में कार्य करने की अनुमति देता है। ''परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ कि शैतान के कामों को नाश करे'' (1यूह. 3:8)। प्रत्येक समय जब भी परमेश्वर शैतान के किसी भी कार्य का नाश करता है, तब इससे उसके सामर्थ और ज्ञान को महिमा मिलती है।

प्रधानताओं और अधिकारों पर यीशु प्रमुख है

Jesus is the Head Over Principalities and Powers

मसीही होने के कारण, शैतान और बुरी आत्माओं से निपटने का हमारा उत्तरदायित्व दो-तरफा है: अपने जीवनों में उसका सामना करना (याकू. 4:7), और उन्हें उनमें से बाहर निकालना जो इनसे छुटकारा चाहते हैं (मर. 16:17)। दूसरों में से दुष्टात्माओं को निकालने का अनुभव प्राप्त करनेवाला कोई भी मसीही एक सामान्य नियम के रूप में यह जानता है, कि जब तक दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति छुटकारा पाना न चाहे, वह

92. इस विषय पर मेरी पुस्तक, *परमेश्वर की जांच* में पूरी तरह से विचार-विमर्श किया गया है, जो हमारी वेबसाईट www.shpherdserve.org पर पढ़ने को अंग्रेज़ी भाषा में उपलब्ध है।

93. इस नियम का अपवाद केवल उस दशा में ही होगा जब दुष्टात्मा द्वारा नियंत्रित लोग अपनी स्वतंत्र होने की इच्छा को भी व्यक्त नहीं कर पाते हैं। उन मामलों में, छुटकारा लाने के लिए आत्मा के विशिष्ट दानों की आवश्यकता होगी, और आत्मा के दान आत्मा की इच्छा पर कार्य करते हैं।

उसमें से दुष्टात्मा को बाहर निकालने में असमर्थ होगा।[93] परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा का सम्मान करता है, और यदि कोई व्यक्ति दुष्टात्माओं के साथ ही बने रहना चाहता है तो परमेश्वर उसे नहीं रोकेगा।

यह भी इस बात का एक दूसरा कारण है कि हम भौगोलिक क्षेत्रों पर से क्षेत्रीय आत्माओं को क्यों नहीं निकाल सकते। उन क्षेत्रों की बुरी आत्माओं ने वहां के लोगों को अपनी पकड़ में लिया हुआ है, क्योंकि उन्होंने ही ऐसा करने का चयन किया है। उन्हें सुसमाचार सुनाने के द्वारा हम उनके सम्मुख चुनाव करने का अवसर रख सकते हैं। यदि वे सही चुनाव करें तो उन्हें शैतान और बुरी आत्माओं से छुटकारा मिलेगा। लेकिन यदि वे गलत चुनाव करें, पश्चात्ताप न करने का चुनाव करते हुए, तो परमेश्वर शैतान को उन्हें बंधक बनाए रखने की अनुमति देगा।

यीशु को पवित्रशास्त्र में ''सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि'' कहा गया है (कुलु. 2:10)। यद्यपि *शासन* (आरचे) और *अधिकार* (एक्सोज़िया) के लिए यूनानी शब्द का प्रयोग कई बार राजनैतिक अगुवों के लिए किया गया है, नये नियम में भी उनका प्रयोग शैतानी आत्मिक शासकों के शीर्षक के रूप में भी हुआ है। प्रधानताओं (आरचे) और सामर्थ (एक्सोज़िया) के विरुद्ध मसीही संघर्ष का एक उत्कृष्ठ उदाहरण इफिसियों 6:12 में मिलता है।

पौलुस ने कुलुस्सियों 2:10 में यीशु के सभी अधिकारों और प्रधानताओं के प्रमुख होने के बारे में जो कुछ लिखा, जब हम उसे संदर्भ के साथ पढ़ते हैं, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि वह आत्मिक शक्ति के बारे में बोल रहा है। उदाहरण के लिए, उसी परिच्छेद में चार पदों के बाद पौलुस यीशु के बारे में लिखता है, ''और उसने *प्रधानताओं* और *अधिकारों* को अपने ऊपर से उतार कर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई'' (कुलु. 2:15)।

यदि यीशु प्रधानताओं और अधिकारों का प्रमुख है, तो वह उन सब पर प्रधान है। यह एक अन्यजाति संस्कृति पर मसीही जीवन का एक अद्‌भुत प्रगटीकरण है जिन्होंने उन दुष्टात्माओं से डरते हुए मूर्तिपूजा में समय बिताया जिनके बारे में वे जानते थे कि उनका उन पर प्रभुत्व है।

बचने का एकमात्र मार्ग
The Only Way of Escape

बुरी आत्माओं के बंधन से बचने का एकमात्र मार्ग पश्चात्ताप करना और सुसमाचार पर विश्वास करना है। परमेश्वर ने हमें इसी बचाव को दिया है। कोई भी एक नगर पर से दुष्टात्माओं को बांध नहीं सकता या आपको स्वतंत्र नहीं कर सकता है। जब तक एक व्यक्ति पश्चात्ताप न कर सुसमाचार पर विश्वास नहीं करता उस पर परमेश्वर

का क्रोध बना रहता है (देखें यूह. 3:36), जिसमें शैतानी शक्तियों का नियंत्रण भी आता है।

इसी कारण उन शहरों की दुर्दशा में कोई बदलाव नहीं आता जहां बड़ी आत्मिक सभाओं का आयोजन होता है, क्योंकि शैतानी शक्तियों को प्रभावित करनेवाली वहां कोई चीज़ नहीं होती। मसीही प्रधानताओं और अधिकारों पर दिन रात चिल्ला सकते हैं, वे प्रतिस्पर्धी भाषा का प्रयोग करते हुए दुष्टात्माओं को सताने का प्रयास कर सकते हैं; वे ये सब कुछ हवाई जहाज़ पर से या फिर गगनचुम्बी भवन से कर सकते हैं (जैसा वास्तव में कुछ करते भी हैं) और दुष्टात्माओं पर केवल यही प्रभाव पड़ेगा कि वे मसीहियों की मूर्खता पर हंसेंगी।

आइये आत्मिक युद्ध के बारे में छठी आत्मिक पुराण कथा की ओर बढ़ें।

पुराण कथा # 6 : ''क्षेत्रीय आत्माओं के विरुद्ध आत्मिक युद्ध प्रभावी प्रचार के द्वार को खोलता है।

Myth #6: "Spiritual warfare against territorial spirits opens the door for effective evangelism."

अधिकांश मसीही जो कि क्षेत्रीय आत्माओं के विरुद्ध आत्मिक युद्ध में लगे हुए हैं, वे परमेश्वर के राज्य को बढ़ता हुआ देखना चाहते हैं। इस कारण उनकी सराहना करनी होगी। अधिकांश मसीहियों को लोगों को शैतान की पकड़ से बचते हुए देखने की इच्छा करनी चाहिए।

तौभी, यह महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर के राज्य के निर्माण के लिए हमें परमेश्वर की विधियों का प्रयोग करना है। परमेश्वर जानता है कि क्या चीज़ काम करती है और क्या चीज़ समय की बर्बादी। उसने हमें ठीक-ठीक बताया कि परमेश्वर के राज्य के विस्तार में हमारे क्या उत्तरदायित्व हैं। यह विचार करना कि हम ऐसा कुछ कर सकते हैं जो पवित्रशास्त्र में नहीं पाया जाता जिससे प्रचार कार्य की प्रभावशीलता बढ़ेगी, कुछ ऐसा जिसका प्रयोग यीशु, पतरस या पौलुस ने अपनी सेवकाई में नहीं किया-मूर्खता है।

अधिकांश मसीही ऐसा क्यों सोचते हैं कि आत्मिक युद्ध प्रभावी प्रचार के मार्ग को खोल सकता है? उनका कहना प्रायः यह होता है: ''शैतान ने उद्धार न पाए हुए लोगों के मनों को अन्धा कर दिया है। इसी कारण हमें शैतान को उन्हें अन्धा करने से रोकने को उसके विरुद्ध आत्मिक युद्ध करना होगा। अंधेपन को हटाए जाने के बाद ही लोग सुसमाचार पर विश्वास करेंगे। क्या यह सही है?

इसमें कोइ संदेह नहीं कि शैतान ने उद्धार न पाए लोगों के मनों को अन्धा कर दिया है। पौलुस ने लिखा:

> परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है तो यह नाश होनेवालों ही के लिये पड़ा है और उन अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि

> को इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमच सुसमाचार का प्रकाश उन पर चमके (2 कुरि. 4:3-4)।

प्रश्न यह है, *क्या पौलुस ने यह जानकारी कुरिन्थी मसीहियों को आत्मिक युद्ध के प्रति प्रेरित करने और क्षेत्रीय आत्माओं को निकालने के लिए दी जिससे उद्धार न पाए लोग अधिक से अधिक स्वीकार किये जाएं।*

कई संभावित कारणों का जवाब *नहीं* है।

सर्वप्रथम, क्योंकि पौलुस ने यह नहीं कहा, ''चूंकि कुरिन्थियों, शैतान ने अविश्वासियों के मनों को अन्धा कर दिया है। इसलिये मैं चाहता हूं कि तुम आत्मिक युद्ध कर क्षेत्रीय आत्माओं को निकालो जिससे यह अंधापन हट जाए।'' इसके विपरीत जिस अगली चीज़ का उसने वर्णन किया वह उसके द्वारा मसीह का प्रचार था, जो कि आत्मिक अंधेपन को हटाए जाने का मार्ग है।

दूसरा, अपने किसी भी पत्र में पौलुस ने किसी भी विश्वासी को अपने नगरों पर से दृढ़ गढ़ों को ढाने के कार्य में जुड़े रहने का निर्देश *नहीं* दिया कि प्रचार कार्य में वृद्धि हो।

तीसरा, पौलुस के सभी पत्रों का अध्ययन करने से हम जान पाते हैं कि उसने इस पर विश्वास नहीं किया कि अविश्वासियों के विश्वासी बने रहने का प्राथमिक कारण शैतान द्वारा अंधा किया जाना था। शैतान द्वारा अंधा किया जाना एक सहयोगी घटक हो सकता है, लेकिन प्रमुख या एकमात्र घटक नहीं। *लोगों को उद्धार पाने से जो चीज़ रोक सकती है वह उनके हृदयों की कठोरता है।* इसी कारण शैतान सभी के मनों को अन्धा करने के योग्य नहीं है। कुछ लोग सत्य को सुनकर उस पर विश्वास करते हैं, और इसी कारण वे पूर्व में विश्वास किये जाने वाले किसी भी झूठ को अस्वीकार देते हैं। उनके अविश्वास का कारण शैतान द्वारा अन्धा किया जाना नहीं है, बल्कि उनका अविश्वास ही शैतान को अंधा करने की अनुमति देता है।

कठोर मन

Callous Hearts

इफिसियों को लिखे अपने पत्र में, प्रेरित पौलुस ने स्पष्ट किया कि गैर-मसीही अविश्वास में क्यों बने रहते हैं:

> इसलिये मैं यह कहता हूं और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजाति लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। क्योंकि *उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है* (शायद

> शैतान द्वारा अंधा किये जाने का उल्लेख) और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और *उनके मन की कठोरता के कारण* वे परमेश्वर के जीवन से अलग किये हुए हैं। और वे सुन्न होकर लुचपन में लग गए हैं, कि सब प्रकार के गन्दे काम लालसा से किया करें (इफि. 4:17-19, पर बल दिया गया है)।

पौलुस ने कहा कि उद्धार न पाए लोगों को 'उनकी अज्ञानता के कारण' परमेश्वर के जीवन से अलग किया गया है। लेकिन वे अज्ञानता में क्यों हैं? उनकी ''समझ अन्धी क्यों हो गई है''? जवाब है, ''उनके मनों की कठोरता के कारण।'' वे ''कठोर'' हो गए हैं। लोगों के बचाए न जाने की दशा में बने रहने का प्राथमिक कारण यही है।[94] वे स्वयं इसके दोषी हैं। शैतान उन्हें केवल वही झूठ देता है जिस पर वे विश्वास करना चाहते हैं।

यीशु का भूमि और बोनेवाले का दृष्टांत इस धारणा का स्पष्ट उदाहरण देता है:

> एक बोनेवाला बीज बोने निकला: बोते हुए कुछ मार्ग के किनारे गिरा, और रौंदा गया, और आकाश के पक्षियों ने उसे चुग लिया. .. दृष्टांत यह है; बीज तो परमेश्वर का वचन है। मार्ग के किनारे के वे हैं, जिन्होंने सुना; तब शैतान आकर उनके मन में से वचन उठा ले जाता है, कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएं (लूका 8:5, 11-12)।

ध्यान दें कि बीज, जो सुसमाचार को प्रस्तुत करता है, मार्ग के किनारे गिरा और रौंदा गया। यह उस कठोर भूमि को नहीं बेध सका जहां से होकर लोग जाते हैं। इस कारण यह पक्षियों के लिए इसे उठाना सरल हो गया; जो शैतान को प्रस्तुत करते हैं कि बीज को चुराएं।

इस दृष्टांत का उद्देश्य लोगों के मनों की जांच करने का है जो भूमि के समान कई तरह का होता है। यीशु स्पष्ट कह रहा था कि कुछ लोग क्यों विश्वास करते हैं और कुछ क्यों नहीं करते: यह केवल उन पर निर्भर करता है।

शैतान इस चित्र में कैसे आता है? वह केवल कठोर मनों से ही वचन को चुरा सकता है। बीजों के अंकुरित न होने का दूसरा कारण दृष्टांत के पक्षी थे। प्राथमिक समस्या भूमि के साथ थी; वास्तव में, भूमि की कठोरता के कारण ही पक्षियों के लिए बीज को चुग पाना संभव हो सका।

यही चीज़ सुसमाचार के साथ भी सत्य है। सुसमाचार को अस्वीकार करने पर लोग अंधे बने रहने का चयन करते हैं। उन्होंने सत्य पर विश्वास करने के बजाए झूठ पर विश्वास किया। जैसा यीशु ने कहा, ''ज्योति जगत में आई है, और *मनुष्यों*

94.रोमियों 1:18-32 में पौलुस द्वारा रोम के विश्वासियों का चित्रण भी इस विचारधारा का समर्थन करता है।

ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे'' (यूह. 3:19, पर बल दिया गया है)।

बाइबल हमें यह विश्वास नहीं कराती कि लोग ईमानदार व भले मनवाले हैं, जो केवल शैतान द्वारा अंधे न किये जाने पर ही सुसमाचार पर विश्वास करेंगे। इसके विपरीत, बाइबल मानव चरित्र के हल्के चित्र को चित्रित करती है और परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसके पापपूर्ण चयन के लिए उत्तरदायी ठहराएगा। अपने न्याय सिंहासन पर बैठे हुए परमेश्वर इस तरह के किसी बहाने को स्वीकार नहीं करेगा, ''शैतान ने मुझसे ऐसा करवाया।''

शैतान लोगों के मनों को कैसे अन्धा करता है?

How Satan Blinds People's Minds

शैतान लोगों के मनों को कैसे अन्धा करता है? क्या उसके पास कुछ ऐसी रहस्यमयी आत्मिक शक्ति है जिसे वह लोगों के सिरों पर डालकर उनकी समझ को मन्द कर देता है? क्या शैतान उनके सिरों पर अपना पंजा डालकर, उनके विचार करने की शक्ति को प्रभावित करता है? नहीं, शैतान लोगों के मनों को *झूठ पर विश्वास करने के द्वारा* अन्धा करता है।

निस्संदेह, यदि लोग सच में यह विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है जो उनके पापों के लिये मारा गया। यदि वे सच में यह विश्वास करते कि अपने जीवनों का लेखा देने को एक दिन उन्हें उसके सामने खड़ा होना होगा, तब वे पश्चात्ताप कर उसके अनुयायी बन जाते। लेकिन उन्होंने इन सब पर विश्वास नहीं किया। तौभी, उन्होंने *किसी चीज़* पर विश्वास तो किया। वे यह विश्वास कर सकते हैं कि कोई परमेश्वर नहीं है और मृत्यु पश्चात् कोई जीवन नहीं है। वे पुनर्जन्म पर विश्वास कर सकते हैं या फिर इस पर कि परमेश्वर किसी को भी नरक नहीं भेजेगा। वे यह सोच सकते हैं कि अपने धर्मी कार्यों के द्वारा वे स्वर्ग जा पाएंगे। लेकिन चाहे उनका विश्वास कैसा भी हो, यदि यह सुसमाचार के अनुसार नहीं है तो इसका एक शब्द में सांराश दिया जा सकता है: झूठ। वे सत्य पर भरोसा नहीं करते, इसी कारण शैतान उन्हें झूठ के द्वारा अन्धा बना कर रखता है। तौभी, यदि वे स्वयं को नम्र करते हुए सत्य पर भरोसा करें, तो शैतान उन्हें अधिक समय तक अन्धा नहीं रख पाएगा।

अंधकार के झूठ

The Lies of Darkness

पवित्रशास्त्र में शैतान के राज्य को ''*अंधकार* का वश'' कहा गया है (कुलु. 1:13)। अंधकार, सत्य की अनुपस्थिति ज्योति या प्रकाश की कमी को दिखाता है। अंधकार में होने पर आप अपनी कल्पना के अनुसार चलते हुए कई बार चोट खाते हैं। ऐसा

ही शैतान के अंधकार के राज्य में भी है। इसमें रहने वाले अपने जीवनों को अपनी कल्पनाओं के अनुसार चलाते हैं, और उनकी कल्पनाएं सदैव शैतान के झूठ से भरी होती हैं। वे आत्मिक अंधकार में हैं।

शैतान के राज्य की परिभाषा एक भौगोलिक राज्य की अपेक्षा भरोसे के राज्य से दी जा सकती है– भरोसा, अर्थात् झूठ में। अंधकार का राज्य ज्योति के राज्य के स्थान में ही पाया जाता है। सत्य पर विश्वास करने वाले झूठ पर विश्वास करनेवालों के बीच में रहते हैं।[95] हमारा प्राथमिक कार्य सत्य की घोषणा उन लोगों पर करने का है जो झूठ पर भरोसा करते हैं। सत्य पर विश्वास करने वाले को शैतान अधिक समय तक धोखा नहीं दे सकता।

अत:, हमें उद्धार न पाए लोगों को शैतान से बुरी आत्माओं को ''बान्धने'' के द्वारा नहीं बल्कि सत्य की घोषणा करने के द्वारा छुड़ाना है। यीशु ने कहा, ''तुम सत्य को जानोगे, और *सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा*'' (यूह: 8:32, पर बल दिया गया है)। आत्मिक अंधेपन को सत्य के द्वारा हटाया जाता है।

यूहन्ना के सुसमाचार के इसी परिच्छेद में, यीशु ने एक उद्धार न पाए हुए समूह से कहा:

तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और *सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूठ का पिता है।* परन्तु मैं जो सच बोलता हूं, इसी लिये तुम मेरी प्रतीति नहीं करते (यूहन्ना 8:44, 45, पर बल दिया गया है)।

यीशु द्वारा अपने और शैतान के बीच की गई तुलना पर ध्यान दें। यीशु सत्य बोलता है, शैतान झूठा है।

इस पर भी ध्यान दें कि यद्यपि यीशु ने अपने शिष्यों को यह बताया कि वे अपने पिता शैतान से थे, और चाहे उसने शैतान को झूठे के रूप में दिखाया, तौभी वह उन पर उस सत्य पर विश्वास करने का उत्तरदायित्व देता है जो वह बोलता है। उनके अंधे होने का दोष शैतान पर नहीं है यह उनका अपना दोष है। *यीशु ने उन्हें इसके लिए उत्तरदायी ठहराया है।* शैतान ''अंधकार से प्रेम करनेवालों'' के साथ रहता है, उन तक झूठ पहुंचाकर अंधकार में रखते हुए। लेकिन शैतान सत्य पर विश्वास रखनेवालों को मूर्ख नहीं बना पाएगा।

अत:, हम ज्योति को फैलाने के द्वारा अंधकार के राज्य को धकेल सकते हैं– जो कि परमेश्वर के वचन का सत्य है। इसी कारण, यीशु ने हमसे यह *नहीं* कहा, ''सारे

95. बेशक, यह सच है कि विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में किसी भी राज्य में लोगों की संख्या कम या अधिक प्रतिशत है।

संसार में जाकर शैतान को बांधो'' बल्कि इसके विपरीत उसने, ''सारे संसार में जाकर सुसमाचार का प्रचार'' करने को कहा। यीशु ने पौलुस से कहा कि उसके प्रचार का उद्देश्य लोगों की ''*आंखों को खोलना है* कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें (प्रेरित. 26:18, पर बल दिया गया है)। इससे स्पष्ट हो जाता है कि जब लोगों पर सुसमाचार के सत्य को प्रगट किया जाता है तब वे झूठ की अपेक्षा सत्य पर भरोसा करते हुए अंधकार से ज्योति की ओर फिरने का निर्णय लेते हैं और शैतान के वश से छूट जाते हैं। हमें केवल जिन दृढ़ गढ़ों को 'ढाना'' है, वे लोगों के मनों में निर्मित्त किये गए दृढ़ गढ़ हैं।

यह परमेश्वर की योजना है
This is God's Plan

यह न भूलें कि परमेश्वर ने शैतान को स्वर्ग पर से पृथ्वी पर फेंका था। वह शैतान को पूरे ब्रह्माण्ड में कहीं भी फेंक सकता था या फिर उसे सदा के लिए बन्दी बना सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया, क्यों? क्योंकि परमेश्वर शैतान का प्रयोग कर अपने अन्तिम लक्ष्य एक-दिन एक ऐसे परिवार का होना जिसमें लोग स्वतंत्र रूप से उसे प्रेम करते हुए उसकी सेवा करने का चयन करेंगे–को पूरा करना चाहता था।

यदि परमेश्वर एक ऐसे परिवार को चाहता था जो उससे प्रेम करे तो इसके लिए दो चीज़ों का होना ज़रूरी था। सर्वप्रथम, उसे लोगों की रचना स्वतंत्र इच्छा के साथ करनी थी, क्योंकि प्रेम की नींव स्वतंत्र इच्छा है। रोबोट या मशीन प्रेम नहीं कर सकते।

दूसरा, उसे उनकी जांच एक ऐसे वातावरण में करनी थी जहां वे उसकी आज्ञा मानने या आज्ञा न मानने का चुनाव कर सकते या उससे प्रेम व घृणा करने का; *और ईमानदारी की जांच होने के लिए बेईमानी का भी पाया जाना ज़रूरी है।* अत:, हम यह समझना आरंभ करें कि परमेश्वर ने शैतान को पृथ्वी पर क्यों रखा। शैतान को मानव द्वारा किये गए समझौते पर कार्य करना होता है। झूठ को स्वीकार करने वाले को ही प्रभावित करने की अनुमति सीमित रूप से उसके पास है। प्रत्येक को इस तरह के चुनावों का सामना करना होता है: *मैं परमेश्वर पर विश्वास करूं या शैतान पर? मैं परमेश्वर की सेवा करूं या शैतान की?* चाहे लोग यह जानें या नहीं, उन सभी ने एक निर्णय लिया है। हमारा कार्य उन लोगों को पश्चात्ताप करने को प्रोत्साहित कराने का है जिन्होंने गलत निर्णय लिया है और उन्हें सही निर्णय लेने के द्वारा सुसमाचार पर विश्वास कराने की।

अदन की वाटिका में क्या ऐसा ही नहीं हुआ था? परमेश्वर ने वहां भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष को रखा था और उसके बाद उसने आदम और हव्वा को उस वृक्ष के फल

को खाने से मना किया था। यदि परमेश्वर नहीं चाहता था कि वे उसमें से खाएं, तो उसने उस वृक्ष को वहां क्यों लगाया? इसका जवाब है कि यह परीक्षा के लिए रखा था।

हम इस पर भी ध्यान दें कि परमेश्वर की अनुमति पर ही शैतान ने हव्वा को बहकाया था। पुन:, ईमानदारी की जांच होने के लिए, बेईमानी का भी पाया जाना ज़रूरी है। शैतान ने हव्वा से झूठ बोला और उसने उस पर विश्वास किया, और इस तरह से उसने उस समय, उस पर विश्वास *न* करने का निर्णय लिया जो परमेश्वर ने उससे कहा था। परिणाम? प्रथम, स्वतंत्र इच्छा रखनेवालों ने अपने मनों में पाई जानेवाली बेईमानी को प्रगट किया।

इसी तरह से, प्रत्येक स्वतंत्र इच्छा रखनेवाले की जांच उसके जीवनभर में होती है। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के द्वारा स्वयं को प्रगट किया, जिससे हर कोई यह देख सके कि एक अद्‌भुत परमेश्वर है (देखें रोमि. 1:19-20)। परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक को एक विवेक दिया है, और अपने मनों में हम सही या गलत को जानते हैं (देखें रोमि. 2:14-16)। शैतान और उसकी बुरी आत्माओं को झूठ बोलने तथा लोगों की परीक्षा लेने की अनुमति सीमित रूप में दी गई है।

विषय का दुखद सत्य यह है कि प्रत्येक स्वतंत्र इच्छा वाले ने विद्रोह कर परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला (रोमि. 1:25)। तौभी, हम परमेश्वर को धन्यवाद दे सकते हैं कि उसने हमारे पापों के लिए एक प्रायश्चित और उसके परिवार में जन्म लेने के मार्ग को उपलब्ध कराया। यीशु की बलिदानपूर्ण मृत्यु ही हमारी सभी समस्याओं का एकमात्र और पर्याप्त जवाब है।

शैतान का धोखा, अब और बाद में

Satan's Deception, Now and Later

अत: हम एक बात तो समझ गए हैं कि इस ग्रह पर शैतान और उसकी विद्रोही, सेना को कार्य करने की अनुमति क्यों दी गई: अंधकार से प्रेम करनेवालों को धोखा देने के उद्देश्य से।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अनुसार विचार करने पर यह सत्य बाद में मान्य हो जाता है कि शैतान को एक दिन एक स्वर्गदूत के द्वारा बांधा जाएगा तथा उसे हज़ार वर्ष के लिए कैद में रखा जाएगा। उसे कैद में रखने का क्या कारण है कि वह ''जाति-जाति के लोगों को फिर न भरमाए'' (प्रका. 20:3)। उस सहस्राब्दि के समय में, यीशु स्वयं यरूशलेम से सारे संसार पर शासन करेगा।

लेकिन उन हज़ार वर्षों के पश्चात् शैतान को कुछ समय के लिये छोड़ा जाएगा। परिणाम? वह उन जातियों को जो ''पृथ्वी के चारों ओर होंगी'' भरमाएगा (प्रका. 20:8)।

यदि परमेश्वर नहीं चाहता कि शैतान उस समय के लोगों को भरमाए तो वह उसे क्यों छोड़ेगा? विशेष रूप से इस सच्चाई के प्रकाश में परमेश्वर ने शैतान को बन्दी बना लिया है ''जिससे वह जातियों को अधिक समय तक न भरमाने पाए।''

बेशक, परमेश्वर यह कभी नहीं चाहेगा कि शैतान किसी को धोखा दे। लेकिन वह यह जानता है कि शैतान केवल उन्हें ही भरमा सकता है जो सत्य को अस्वीकार कर देते हैं, और इसी कारण परमेश्वर उसे अब कार्य करने की अनुमति देता है, परन्तु वह उसे तब क्यों कार्य करने की अनुमति देगा? शैतान द्वारा लोगों के भरमाए जाने पर, लोगों के मनों की दशा स्पष्ट हो जाती है, और इसके बाद परमेश्वर ''जंगली दानों में से गेहूं'' को छाँट सकता है (देखें मत्ती 13:24-30)।

सहस्राब्दि के अन्त में शैतान के छोड़े जाने पर यही होगा। वह सभी अन्धकार से प्रेम करनेवालों को भरमाएगा, और वे मसीह के शासन को उलटने के प्रयास में यरूशेलम के चारों ओर अपनी सेना को एकत्रित करेंगे। परमेश्वर यह जान लेगा कि कौन उसे प्रेम करता है और कौन उससे घृणा करता है, और इसी कारण वह उसी क्षण ''स्वर्ग से आग'' को भेजेगा जो ''उन्हें भस्म कर देगी'' (प्रका. 20:10)। शैतान उस समय उसी तरह से परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने का कार्य करेगा जिस तरह से वह अब करता है। इसी कारण, यह विचार करना मूर्खतापूर्ण है कि हम ''क्षेत्रीय आत्माओं'' को निकाल सकते हैं। परमेश्वर अपने कुछ कारणों से उन्हें कार्य करने देता है।

बाइबल प्रचार कार्य
Biblical Evangelism

सही बात यह है कि न तो यीशु मसीह और न ही नये नियम के किसी भी प्रेरित ने इस तरह के आत्मिक युद्ध को किया कि आज कोई कहे कि वर्तमान समय के प्रचार कार्य में उस प्रभाव की कमी है। हम यीशु, पतरस, यूहन्ना, स्तिफनुस, फिलिप्पुस या पौलुस को उन नगरों से ''दृढ़ गढ़ों को ढाते'' या ''बलवन्त पुरुषों को बान्धते'' हुए नहीं देखते जहां उन्होंने प्रचार किया। इसके विपरीत, उन्होंने पवित्र आत्मा की अगुवाई में उसी स्थान पर प्रचार किया जिसका निर्देश उसने उन्हें दिया; हम उन्हें सुसमाचार का दावा करते हुए पाते है–लोगों को पश्चात्ताप और मसीह में विश्वास लाने का आह्वान करते हुए– और हम उन्हें अद्भुत परिणामों का आनन्द उठाते हुए पाते हैं। और जिन स्थानों पर लोगों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया हम उन्हें 'आत्मिक युद्ध लड़ते हुए नहीं पाते कि शैतान उनके मनों को अन्धा न करता रहे।'' इसके विपरीत हम उन्हें यीशु की आज्ञानुसार ''अपने पैरों की धूल झाड़ते'' हुए तथा दूसरे शहर में जाता हुआ पाते हैं (देखें मत्ती 10:14; प्रेरित. 13:5)।

यह जानना अद्भुत है कि कोई भी यह दावा कर सकता है कि ''दृढ़ गढ़ों का ढाना'' और ''बलवन्त पुरुषों को बान्धना'' सफल प्रचार कार्य की पूर्वापेक्षा है जबकि

कलीसियाई इतिहास में जागृति के ऐसे असंख्य उदाहरण पाए जाते हैं। जहां इस तरह के ''आत्मिक युद्ध'' कभी नहीं लड़े गए।

कुछ कहेंगे, ''लेकिन हमारी तकनीक कार्य करती है। चूंकि हमने इस तरह के आत्मिक युद्ध का आरम्भ किया है, इसी कारण पहले की तुलना में अब अधिक लोग बचाए जा रहे हैं।''

यदि यह सत्य है तो मैं आपको बताता कि क्यों? इसका कारण इस समय में की गई अत्यधिक प्रार्थनाएं और प्रचार का किया जाना है, या फिर लोगों के एक समूह द्वारा अचानक से ही इसे स्वीकार करना।

यदि एक प्रचारक आपको कुछ इस तरह से कहे तो आप उसे क्या कहेंगे ''आज रात, जागृति सभा में प्रचार करने से पूर्व मैंने तीन केले खाए और मेरे प्रचार करने पर 16 लोग बचाए गए। मैंने अन्ततः प्रभावी प्रचार के रहस्य को जान ही लिया। अब से मैं प्रचार करने से पूर्व निश्चित कर लूंगा कि मैंने तीन केले खाए हैं या नहीं?''

निश्चय ही आप उस प्रचारक से कहेंगे, ''तुम्हारे तीन केले खाने से उन सोलह लोगों के बचने का कोई संबंध नहीं है। तुम्हारी सफलता की कुंजी यह है कि तुमने सुसमाचार का प्रचार किया और उसे सुनने वाले उन सोलह लोगों ने ग्रहण किया।''

परमेश्वर अपने वचन को आदर देता है। यदि परमेश्वर कोई प्रतिज्ञा करता है तथा कोई उस प्रतिज्ञा के साथ जुड़ी बातों को पूरा करता है, तो परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा, चाहे वह व्यक्ति पवित्रशास्त्र से हटकर चीज़ों को कर रहा हो।

यही बात वर्तमान आत्मिक युद्ध के साथ भी सही है। यदि आप ट्रैक्ट्स बांटना और अपने शहर पर से ''बलवन्त पुरुषों को बान्धना'' आरम्भ कर दें, तो निश्चित प्रतिशत में लोग बच जाएंगे। यदि आपने बलवन्त पुरुषों को बान्धे बिना ट्रेक्ट्स बांटना आरम्भ किया है, तब भी उतने ही प्रतिशत में लोग बच जाएंगे।

एक आत्मिक फसल के लिए पवित्रशास्त्र के अनुसार कैसे प्रार्थना करें

How to Pray Scripturally for a Spiritual Harvest

हमें उद्धार न पाए लोगों के लिये कैसे प्रार्थना करनी चाहिए? सर्वप्रथम, हमें यह समझना चाहिए कि नये नियम में कोई भी ऐसा निर्देश नहीं दिया गया है जो हमें बताता है कि प्रार्थना किये जाने से परमेश्वर लोगों को बचाएगा और न ही किसी आरम्भिक मसीही द्वारा इस तरह प्रार्थना किये जाने का कोई विवरण मिलता है। परमेश्वर के दृष्टिकोण से इस सब के होने का केवल यही कारण है कि उसने संसार में प्रत्येक के बचाए जाने के लिए जो कुछ करना चाहिए वही किया। वह उनके बचाए जाने की इतनी अधिक इच्छा रखता है कि उसने अपने पुत्र को क्रूस पर मरने के लिए दे दिया।

लेकिन, तौभी, हर कोई क्यों नहीं बचता? क्योंकि हर किसी ने सुसमाचार पर विश्वास नहीं किया, और उन्होंने विश्वास क्यों नहीं किया? इसके केवल दो कारण हैं: (1) या तो उन्होंने कभी भी सुसमाचार को नहीं सुना या (2) उन्होंने सुसमाचार को सुना तो सही लेकिन उसे अस्वीकार दिया।

इसी कारण न बचाए न हुओं के लिए पवित्रशास्त्र के अनुसार प्रार्थना करना, यह प्रार्थना करना है कि उन्हें सुसमाचार को सुनने का अवसर मिले। उदाहरण के लिए, यीशु ने हमें बताया "पक्के खेत बहुत हैं, परन्तु मज़दूर थोड़े हैं। इसलिये *खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने को मज़दूर भेज दे*" (लूका 10:2, पर बल दिया गया है)। लोगों के सुसमाचार सुनने और बचाए जाने के लिए किसी को उन्हें सुसमाचार को बताना होगा। इसी कारण हमें परमेश्वर से उन तक लोगों के भेजे जाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

जिस समय आरम्भिक कलीसिया ने एक आत्मिक फसल के लिए प्रार्थना की, तो उन्होंने इस तरह से प्रार्थना की, "अपने दासों को यह वरदान दे कि *तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएं।* और चंगा करने के लिये तू अपना हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्‌भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जाएं (प्रेरित. 4:29-30, पर बल दिया गया है)।

वे तो यह प्रार्थना कर रहे थे कि (1) उन्हें निर्भीकता के साथ सुसमाचार को सुनाने का अवसर मिले, या (2) फिर उन सुअवसरों के समय में सुसमाचार को सुनाने की घोषणा करने का जो वे जानते थे कि उनके पास होंगे। उन्होंने परमेश्वर से चंगाई, चिन्ह और चमत्कारों के द्वारा सुसमाचार की पुष्टि करने की अपेक्षा की। वे पवित्र शास्त्र की प्रार्थनाएं हैं और लोगों को जो कार्य दिया गया वह सुसमाचार को सुनाने का था। परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना का जवाब दिया: "जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे" (प्रेरित. 4:31)।

पौलुस ने यह कैसे सोचा कि मसीहियों को आत्मिक फसल उत्पन्न करने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए? क्या उसने उन्हें परमेश्वर से अधिक लोगों के बचाए जाने को प्रार्थना करने के लिए कहा था? नहीं, आइये देखते हैं कि उसने क्या कहा:

निदान, हे भाइयो, *हमारे लिये प्रार्थना किया करो, कि प्रभु का वचन ऐसा शीघ्र फैले और महिमा पाए,* जैसा तुम में हुआ (2 थिस्स. 3:1, पर बल दिया गया है)।

> और मेरे लिये भी, कि मुझे बोलने के समय *ऐसा प्रबल वचन दिया दिया जाए कि मैं हियाव से सुसमाचार का भेद बता सकूँ,* जिसके लिये मैं जंज़ीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूं। और यह भी *कि मैं उसके विषय में जैसा मुझे चाहिये हियाव से बोलूं* (इफि. 6:19-20, पर बल दिया गया है)।

लोगों का बचाया जाना या नहीं बचाया जाना परमेश्वर पर अधिक निर्भर करता है न कि हम पर, इसलिए हमारी प्रार्थनाएं यह होनी चाहिएं कि लोग सुसमाचार को सुनने पाएं और यह भी कि इसकी घोषणा करने में परमेश्वर हमारी सहायता करे। परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देगा, लेकिन तौभी, इस बात की गारंटी नहीं है कि कोई बच जाएगा, क्योंकि परमेश्वर लोगों को अपने चुनाव करने का अधिकार देता है। उनका उद्धार सुसमाचार के प्रति उनकी प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है।

पुराण कथा # 7 - ''एक मसीही पाप करने पर दुष्टात्मा के लिए द्वार खोलता है कि वह आकर उसके साथ रहे।''

Myth #7: "When a Christian sins, he opens the door for a demon to come and live in him."

यह सत्य है कि एक मसीही के पाप करने का कारण यह भी हो सकता है कि उसने स्वयं को दुष्ट आत्मा की परीक्षा के लिए सौंपा हो। तौभी, एक बुरी आत्मा के सुझाव को मानने का अर्थ यह नहीं कि इससे दुष्ट विश्वासी के जीवन में प्रवेश करने के योग्य हो जाता है। मसीही होकर पाप करने पर, हम परमेश्वर की आज्ञा न मानने के कारण उसके साथ अपनी सहभागिता को तोड़ते हैं (देखें 1यूह. 1:5-6)। हम दोष भावना का अनुभव करते हैं। हमारा उसके साथ *संबन्ध* तौभी टूटा नहीं होता क्योंकि हम अभी की उसकी संतान रहते हैं।

यदि हम अपने पापों को मान लें, तो ''वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है'' (1यूह. 1:9)। इसके बाद हमारी उसके साथ सहभागिता फिर से जुड़ जाती है। ध्यान दें कि यूहन्ना ने यह नहीं कहा कि किसी भी पाप के दोषी होने पर हमें अपने भीतर बसने वाली दुष्टात्मा से शुद्ध होने की ज़रूरत है।

प्रत्येक मसीही संसार, देह और दुष्ट की ओर से आने वाली प्रत्येक परीक्षा का सामना प्रतिदिन करता है। पौलुस ने लिखा कि हम बहुत सी दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध संघर्ष में लिप्त हैं (देखें इफि. 6:12)। इसलिये कुछ मात्रा में प्रत्येक विश्वासी दुष्टात्माओं से पीड़ित हैं। यह सामान्य बात है, और परमेश्वर के वचन में विश्वास रखते हुए दुष्ट और दुष्टात्माओं से सामना करने का उत्तरदायित्व हमारा है (देखें 1पत. 5:8-9)। जब हम विश्वास करते तथा जो कुछ परमेश्वर कहता उस पर कार्य करते हैं, यही शैतान का सामना करना होता है।

उदाहरण के लिये, शैतान द्वारा हममें निराशा के विचार उत्पन्न करने, पर हमें निराशा के प्रतिकूल पवित्रशास्त्र के वचनों पर मनन करना चाहिए और ''हमेशा आनिन्दत रहते हुए'' (1थिस्स. 5:16) तथा ''प्रत्येक बात में धन्यवाद देते हुए'' (1थिस्स. 5:18)। परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहिए। परमेश्वर के वचन पर कार्य

करने तथा शैतान के विचारों के स्थान पर परमेश्वर के विचारों को लाने की ज़िम्मेदारी हमारी है।

हमें यह जानना चाहिए कि स्वतंत्र इच्छा वाले प्राणी होने के कारण हम जो चाहें वह सोच सकते हैं। यदि एक विश्वासी निरन्तर शैतान की ओर से सुनने तथा उसके सुझाव पर चलने का *चुनाव* करता है, तो वह निश्चय ही अपने मन को *प्रताड़ित* होने के लिए खोल सकता है, जो कि गलत विचारों के प्रभुत्व में पाए जाने की एक दशा है। यदि वह इससे भी अधिक करने का चुनाव करता है, तो वह एक तरह की गलत विचारधारा से *ग्रस्त* हो सकता है, जिसका होना एक मसीही के साथ बहुत कम ही होता है, परन्तु यह हो सकता है। तौभी, यदि ग्रस्ति व्यक्ति स्वतंत्र होना चाहता है तो उसे केवल परमेश्वर के वचनों के अनुसार विचार करने तथा शैतान का सामना करने की ज़रूरत है।

लेकिन क्या वह कभी *दुष्टात्माग्रस्त* हो सकता है? केवल तब ही जब वह स्वेच्छा से मसीह को अस्वीकार कर उससे मुंह फेर लेता है। तब मसीही न बने रहने पर[96] वह दुष्टात्माग्रस्त हो जाता है– यदि वह स्वयं को दुष्ट आत्मा के प्रति समर्पित कर देता है।

यह सच है कि नये नियम में किसी भी मसीही के दुष्टात्माग्रस्त होने का एक भी उदाहरण नहीं मिलता। और न ही मसीहियों के लिए इस बात की कोई चेतावनी मिलती है कि वे दुष्टात्माग्रस्त हो सकते हैं। और न ही सह-मसीहियों में से दुष्टात्मा को निकालने के संबंध में कोई निर्देश दिया गया है।

सच्चाई यह है कि मसीही होने के कारण हमें दुष्टात्माओं को निकालने की नहीं बल्कि परमेश्वर के वचन से अपने मनों को नया बनाने की ज़रूरत है। यह पवित्रशास्त्र के अनुसार है। पौलुस ने लिखा:

> और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो। (रोमि. 12:2)।

एक बार हमारे मनों के पुराने विचारों वाले नमूनों से शुद्ध हो जाने और परमेश्वर के वचन से नये हो जाने पर, हम अपनी पापपूर्ण आदतों पर विजय पाने के साथ-साथ मसीह-समान ढंग से रहने लगते हैं। सत्य ही है जो कि हमें स्वतंत्र करता है (यूह. 8:32)। हमारे मनों के नये हो जाने पर हम बदल जाते हैं, न कि झाड़-फूंक करने पर।

---

96. ''एक बार उद्धार पाने के बाद, हमेशा के लिए उद्धार पाया'' की विचारधारा वाले निस्संदेह असहमत होंगे। मैं उन्हें रोमि. 11:22; 1कुरि. 15:1-2; फिलि. 3:18-19; कुलु. 1:21-23 और इब्रा. 3:12-14 पढ़ने को प्रेरित करूंगा, यदि इनमें कहीं ''यदि'' शब्द आता है तो उस पर विशेष ध्यान देते हुए।

अत: अधिकांश मसीही इस तरह से क्यों कहते हैं कि उनमें दुष्टात्मा (या दुष्टात्माएं) हैं? एक संभावना यह भी है उन्होंने अपने में दुष्टात्मा होने की कल्पना की कि उसे उनमें से निकाला जाए। अधिकांश मसीही असमंजस में होने के साथ-साथ परमेश्वर के वचन में भी निपुण नहीं हैं, और इसी कारण वे आसानी से ''छुटकारे के सेवक'' के शिकार बन जाते हैं, जो कि लोगों की विचारधारा को यह कहते हुए भ्रष्ट करते हैं कि उनमें दुष्टात्मा है। एक बार लोगों के यह स्वीकार किये जाने पर कि उनमें दुष्टात्मा है, वे स्वाभाविक रूप से उन सभी के साथ सहयोग करने लगते हैं जो दुष्टात्मा को निकालने वाले प्रतीत होते हैं।

दूसरी वास्तविक संभावना यह है कि इस तरह के लोग जिनमें से दुष्टात्मा को निकाला गया, वे अपने छुटकारे के समय में सच्चे मसीही नहीं थे, बेशक वे स्वयं को विश्वासी समझते थे। आधुनिक सुसमाचार जो कि बाइबल के सुसमाचार के प्रतिकूल है, इसने बहुत से लोगों की मसीही होने की विचारधारा का धोखा दिया, और यीशु उनका प्रभु नहीं है। पवित्रशास्त्र में हम पाते हैं कि लोगों के सुसमाचार पर विश्वास करने और नया जन्म लेने पर, उनमें वास करनेवाली दुष्टात्माएं यंत्रवत् रूप से उनमें से निकल आईं (देखें प्रेरित. 8:5-7)। दुष्टात्मा उन लोगों में नहीं रह सकती जिनमें पवित्रात्मा का वास हो, और पवित्रात्मा सभी नया जन्म पानेवालों में वास करता है।

पुराण कथा 8 : ''एक शहर के इतिहास का अध्ययन करने के द्वारा, हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि इस पर किस दुष्ट आत्मा का प्रभुत्व है, और इस तरह से हम आत्मिक युद्ध में प्रभावी होने के साथ-साथ प्रचार कार्य में भी अधिक प्रभावी हो सकते हैं।''

Myth 8: "Through studying the history of a city, we can determine which evil spirits are dominating it, and thus be more effective in spiritual warfare and ultimately in evangelization."

यह पुराण कथा कई विचारों पर आधारित है जिसका समर्थन, पवित्रशास्त्र के द्वारा नहीं किया जा सकता है। इनमें से एक विचार यह है कि क्षेत्रीय आत्माएं काफी समय तक बनी रहती हैं। अर्थात्, सैकड़ों वर्ष पूर्व एक चीज़ जो किसी स्थान पर रहती थी उसके अब भी वहीं होने की संभावना होना। अत: हम यह जान पाते हैं कि जिस शहर की स्थापना कुछ लालची लोगों के द्वारा की गई थी, उस पर अभी भी लालच की आत्माओं का प्रभुत्व है। यदि शहर किसी समय एक पुराना भारतीय गांव हुआ करता था तो हम परिणाम निकाल सकते हैं कि शर्मिन्दगी और जादू टोने की आत्माओं का प्रभुत्व अभी भी उस नगर में है। और ऐसा ही होता रहता है।

लेकिन क्या यह सत्य है कि सैकड़ों वर्ष पूर्व एक भौगोलिक क्षेत्र में पाई

जानेवाली दुष्ट प्रधानताएं और शक्तियां अभी भी वहां पाई जाती हैं? शायद, लेकिन ज़रूरी नहीं।

उस कहानी पर ध्यान दें जिस पर हमने दानिय्येल की पुस्तक के दसवें अध्याय पर पहले विचार किया था। अज्ञात स्वर्गदूत जो मीकाईल के साथ फारस के राजकुमार के साथ लड़ा था, उसने दानिय्येल से कहा, ''अब मैं फारस के प्रधान से लड़ने को लौटूंगा, और जब निकलूंगा, *तब यूनान का प्रधान आएगा* (दानि. 10:20 पर बल दिया गया है)। इतिहास हमें बताता है कि सिकन्दर महान की विजय पर फारस का राज्य यूनान के हाथों में आना था। तथापि, यह अज्ञात स्वर्गदूत आत्मिक क्षेत्र में होनेवाले परिवर्तनों के प्रति सूचित करने को जागृत था– ''यूनान का राजकुमार'' आ रहा था।

यूनान के राजकुमार के आने पर, क्या उसने उस तरह से आत्मिक क्षेत्र पर शासन किया जिस तरह से फारस के राजकुमार ने आत्मिक क्षेत्र में शासन किया था? यह एक उपयुक्त निष्कर्ष प्रतीत होगा, और यदि ऐसा है, तो कुछ उच्च वर्ग की दुष्टात्माओं, ने भौगोलिक क्षेत्र को बदल दिया है, जिस तरह से यूनानी साम्राज्य को फारस के साम्राज्य में सम्मिलित किया गया था। पृथ्वी पर राजनैतिक परिवर्तन होने पर अंधकार के राज्य में परिवर्तन होने की भी संभावना होती है। तौभी, सच्चाई यह है कि हम इसे तब तक नहीं जान पाते जब तक कि परमेश्वर इसे हम पर प्रगट नहीं कर देता।

इसके अतिरिक्त, इसका फर्क बहुत ही पड़ता है कि बुरी आत्माएं किसी भी भौगोलिक क्षेत्र में क्या कर रही हैं, क्योंकि हम ''आत्मिक युद्ध'' के द्वारा कुछ भी नहीं कर सकते हैं।

अतिरिक्त वर्ग वाली दुष्ट आत्माएं
Over-Categorizing Evil Spirits

इसके अतिरिक्त हमारे विचार में यह सोचना एक धारणा है कि कुछ प्रभुत्व करने वाली दुष्टात्माएं विशिष्ट तरह के पापों में विशिष्ट होती हैं। वे ''लालच की आत्माएं'', ''लालसा की आत्माएं'', ''धार्मिक आत्माएं'', ''झगड़े की आत्माएं'' इत्यादि हैं, जिनका समर्थन पवित्रशास्त्र से नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त, एक विचार यह भी है कि उच्च वर्ग की दुष्टात्माएं अंधकार के राज्य पर राज करती हैं।

यह उनके लिये बहुत अचम्भे की बात है जिन्होंने कभी भी चारों सुसमाचारों का निकटता से अध्ययन नहीं किया कि तीन तरह की *विशिष्ट* दुष्टात्माएं होती हैं जिन्हें यीशु ने निकाला। एक बार एक ''गूंगी दुष्टात्मा'' का वर्णन मिलता है (लूका 11:14), एक बार हम ''गूंगी और बहरी आत्मा'' के बारे में पढ़ते हैं (मर. 9:25), और एक से अधिक बार हम ''अशुद्ध आत्माओं'' के संदर्भ को पाते हैं, जिसमें यीशु द्वारा निकाली गई सभी दुष्टात्माएं सम्मिलित हैं, ''गूंगी और बहरी'' भी (देखें मर 9:25)।

गूंगी और बहरी ''आत्माओं'' के लिए किसी को गूंगा और बहरा बनाने के अलावा क्या और कुछ करना संभव नहीं है? इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसा हो सकता है, क्योंकि मरकुस 9 के लड़के को यह भयंकर रूप से पकड़ सकी थी। इसी कारण ''गूंगा और बहरा'' किसी विशिष्ट *तरह* की आत्मा के संदर्भ में नहीं हो सकता बल्कि सिर्फ इतना बताने के कि एक व्यक्ति को *यह कैसे हानि पहुंचा रही है।* हममें से कुछ बाइबल से हटकर दुष्टात्माओं के संबन्ध में ''वर्गीकरण–पागल'' हो जाते हैं।

पूरे पुराने नियम में विशिष्ट रूप से जिन आत्माओं का उल्लेख किया गया है, जिनके विशिष्ट आत्मा होने पर विचार किया जा सकता है, वे ''*धोखा देनेवाली आत्मा*'' (1राजा 22:22-23), ''भ्रम की आत्मा'' (यशा. 19:14), ''वेश्यावृत्ति की आत्मा'' (होशे 4:12; 5:4) हैं। पहली और दूसरी के संबंध में सभी दुष्ट आत्माओं को ''धोखा देने वाली आत्मा'' या ''भ्रम की आत्मा'' के रूप में संबोधित किया जा सकता है। तीसरी के संबंध में, ''वेश्यावृत्ति की आत्मा'' ज़रूरी नहीं कि किसी विशिष्ट आत्मा के लिये संबोधित हो, बल्कि केवल एक प्रबल होनेवाले रवैये के बारे में।[97]

प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में, केवल 16:16 में ही एक विशिष्ट आत्मा के बारे में बताया गया है जब हम पढ़ते हैं कि एक लड़की में ''भावी कहनेवाली आत्मा'' थी। समस्त प्राणियों में केवल ''धोखा देने वाली आत्माओं'' का ही वर्णन मिलता है (1तीमु. 4:1) जो किसी भी दुष्टात्मा का चित्रण हो सकता है।

बाइबल में कुछ संदर्भों की रोशनी में जिनमें विशिष्ट तरह की दुष्टात्माओं के बारे में बताया गया है, आधुनिक दुष्टात्माओं की सूची को पढ़ना अद्‌भुत होगा, जिसमें सैकड़ों भिन्न तरह की दुष्टात्माओं का वर्णन मिलता है जो लोगों में वास करती हैं या फिर शहरों पर नियंत्रण करती हैं।

हमें विशिष्ट पाप को लेकर दुष्टात्माओं के उच्च दर्जे के वर्गीकरण को नहीं मानना चाहिए। इस तरह से कहना एक धारणा ही है, ''इस शहर में चूंकि अधिक जूआ खेला जाता है, तो यहां जूए की दुष्टात्माएं होनी चाहिए।''

धूम्रपान करने वाली आत्माएं?
Smoking Spirits?

सोचिये, यह कितना मूर्खतापूर्ण होगा कि कोई आकर इस तरह से कहे, ''उस नगर में बहुत सी धूम्रपान करने वाली आत्माएं होनी चाहिए क्योंकि वहां के अधिकांश

97. गिनती 5:14-30 में बताई गई ''ईर्ष्या की आत्मा'' और नीतिवचन की ''अंधकार की आत्मा'' एक प्रबल किस्म के रवैये को बताने को आत्मा शब्द का प्रयोग किये जाने के अच्छे उदाहरण हैं, एक वास्तविक दुष्टात्मा के विपरीत। गिनती 14:22 में हम पढ़ते हैं कि कालेब में एक ''भिन्न आत्मा'' थी, जो निस्संदेह कालेब के अच्छे व्यवहार को बताने का तरीका था।

लोग सिगरेट पीते हैं।'' उन नगरों के बसने से पूर्व वे धूम्रपान करनेवाली आत्माएं क्या कर रही थीं? वे उस समय कहां थीं? धूम्रपान के लिए तम्बाकू का प्रयोग किये जाने से पूर्व वे क्या कर रही थीं? क्या आज कम लोगों के धूम्रपान करने का कारण यह है कि उनमें से कुछ बूढ़ी ''धूम्रपान करने वाली आत्माएं'' या तो मर रही हैं या फिर वे नये क्षेत्रों में जा रही हैं?

यदि हम इस तरह से कहें तो यह कितना मूर्खतापूर्ण होगा, ''वह नगर लालसा की आत्माओं की पकड़ में है, इसी कारण वहां इतने अधिक वेश्याओं के घर हैं?'' सच्चाई यह है कि जहां कहीं लोग मसीह की सेवा नहीं कर रहे हैं, वहां अंधकार का राज्य है। उन अंधकारपूर्ण क्षेत्रों में कार्यरत् अधिकांश दुष्टात्माएं अपने शिकार को पाप करने के लिए फुसलाकर उनसे लगातार परमेश्वर के विरोध में कार्य कराती रहती हैं। वे आत्माएं हर क्षेत्र में लोगों को पाप के प्रति प्रलोभन देती हैं, और कुछ स्थानों में लोग अन्य पापों की तुलना में एक ही तरह के पाप में लिप्त रहते हैं। उनके लिए एकमात्र आशा सुसमाचार है, जिसकी घोषणा करने के लिये हमें बुलाया गया है।

यदि वहां कुछ विशिष्ट तरह की दुष्टात्माएं हैं जो कुछ पापों में विशिष्ट हैं या जो किसी भौगोलिक क्षेत्र पर राज करती है, यह सब जानना भी हमारे लिये सहायक नहीं होगा क्योंकि उन्हें वहां से हटाने के लिए हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं। हमारा उत्तरदायित्व उन लोगों के लिए प्रार्थना करने (पवित्रशास्त्र के अनुसार) का बनता है जिन्हें धोखा दिया गया है और साथ साथ हमें उनमें सुसमाचार का प्रचार भी करना है।

उस नगर में पाए जानेवाले पापों के बारे में पता लगाना ही सबसे अच्छा होगा ताकि उन तक उससे संबन्धित संदेश के साथ पहुंचा जा सके– विशिष्ट रूप से उस पाप का नाम लेते हुए जो उन्हें परमेश्वर के सम्मुख दोषी ठहराता है। लेकिन इसका निर्धारण करने के लिए उस नगर के इतिहास की खोज करना ज़रूरी नहीं है। इसके लिए कोई भी व्यक्ति कुछ समय के लिए वहां जाकर अपनी आंखों और कानों को खुला रख सकता है। प्रधान पाप जल्द ही प्रगट हो जाएंगे।

नये नियम में किसी के भी द्वारा ''आत्मिक मानचित्रण'' किये जाने का कोई उदाहरण नहीं मिलता, कि आत्मिक युद्ध या प्रचार कार्य की तैयारी की जा सके। न ही पत्रियों में ऐसा करने का कोई निर्देश मिलता है। नये नियम में, प्रेरितों ने इस संबंध में पवित्र आत्मा का अनुसरण किया कि उन्हें कहां प्रचार करना चाहिए, कहां विश्वासयोग्यता के साथ सुसमाचार की घोषणा करनी चाहिए, और कहां लोगों को पश्चात्ताप के लिए बुलाना चाहिए तथा प्रभु पर आश्रित रहते हुए चिन्हों के द्वारा वचन की पुष्टि करने को भी। उनकी विधि ने भली-भांति कार्य किया है।

पुराण कथा 9: ''कुछ मसीहियों को पीढ़ीगत या शैतानी शापों से स्वतंत्र होने की ज़रूरत हैं।''

Myth 9: "Some Christians need to be set free from generational or satanic curses."

''पीढ़ीगत शापों'' का समस्त विचार पुराने नियम में पाए जानेवाले पवित्रशास्त्र के चार परिच्छेदों से लिया गया है। वे निर्गमन 20:5; 34:7; गिनती 14:8 और व्यवस्था विवरण 5:9 हैं। आइये गिनती 14:18 पर विचार करें:

> यहोवा कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय है, और अधर्म और अपराध का क्षमा करनेवाला है, परन्तु वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा, और *पूर्वजों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों, और पोतों और परपोतों को देता है* (पर बल दिया गया है)।

हमें पवित्रशास्त्र के इस परिच्छेद का अर्थ कैसे लगाना है? क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर किसी के माता-पिता, दादा-दादी, परदादा-परदादी का दण्ड या श्राप उस पर डालेगा? क्या हमें यह विश्वास करना है कि परमेश्वर एक व्यक्ति के पापों को उस समय क्षमा कर देता है जब वह यीशु पर भरोसा करता है लेकिन उसके बाद उसके दादा-दादी के पापों का दण्ड उसे देता है?

बिलकुल नहीं! नहीं तो परमेश्वर पर पाखंडी या अन्यायी होने का दोष लगाया जा सकता है। उसने स्वयं कहा कि किसी के माता-पिता का दण्ड उसे देना नैतिक रूप से गलत होगा:

> तौभी तुम लोग (इस्राएली) कहते हो, ''क्यों क्या बात है? क्या पुत्र पिता के अधर्म का भार नहीं उठाता?'' (परमेश्वर जवाब देता है:) जब पुत्र ने न्याय और धर्म के काम किये हों, और मेरी सब विधियों का पालन कर उन पर चला हो, तो वह जीवित ही रहेगा। जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, *न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का;* धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा (यहेज. 18:19-20, पर बल दिया गया है)।

इसके अतिरिक्त, मूसा की व्यवस्था के अन्तर्गत, परमेश्वर ने आज्ञा दी थी कि न तो पिता और न ही पुत्र के पापों का दण्ड एक दूसरे पर डाला जाएगा:

> पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए; जिसने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए (व्यवस्था. 24:16)।

इस बात की कोई संभावना नहीं है कि प्रेम और धार्मिकता का परमेश्वर किसी को उसके पूर्वज के पापों के लिए दण्ड या श्राप दे।[98] अत: पवित्रशास्त्र का यह कहने से क्या अभिप्राय है कि परमेवश्वर ''तीसरी से चौथी पीढ़ी तक बच्चों पर से पिताओं की कमियों को दूर करेगा?''

इसका अर्थ केवल यह हो सकता है कि परमेश्वर लोगों को अपनी संतान के सामने पापपूर्ण उदाहरण रखने का दोषी ठहराता है, और वह उन्हें उनके द्वारा प्रभावित होकर उनकी संतान के पाप करने का दोषी ठहराता है, और उनके परपोतों के पापों के लिये भी पवित्र परमेश्वर ऐसा ही है। और कोई नहीं कह सकता कि वह ऐसा करने में अन्यायी है।

विचाराधीन परिच्छेद पर ध्यान दें कि परमेश्वर ''पिता का अधर्म बच्चों पर डालेगा।'' यह *बच्चों या पिता का अधर्म है जिसे उन पर डाला गया है।*

अत: ''पीढ़ीगत शाप'' का समस्त विचार एक अंधविश्वास है और यह परमेश्वर को अन्यायी दिखाता है।

शैतानी शाप?

Satanic Curses?

लेकिन ''शैतानी शापों'' के बारे में क्या कहा जाता है?

सर्वप्रथम, पूरी बाइबल में इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता है कि शैतान किसी पर भी कोई ''शाप लाने'' में समर्थ है, न ही उसके इस तरह से करने का कोई उदाहरण मिलता है। निश्चय ही हम बाइबल में शैतान को लोगों को दुख देते हुए देखते हैं, लेकिन हम उसे किसी परिवार पर ''ऐसा कोई शाप डालते'' हुए नहीं देखते हैं जिससे उनके या उनकी पीढ़ी के साथ लगातार बुरा होता रहे।

प्रत्येक मसीही अपने पूरे जीवन भर शैतान और बुरी आत्माओं से दुख उठाता है। (एक सीमित मात्रा में) लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हममें से प्रत्येक को अपने ऊपर से उस ''शैतानी शाप को तोड़ना'' है जो हम पर हमारे माता-पिता से आया है। हमें परमेश्वर के वचन पर खड़े रहकर और विश्वास के द्वारा शैतान का सामना

98. कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि बच्चे अपने माता-पिता के पापों का दुख नहीं उठाते, क्योंकि प्राय: ऐसा होता है। तथापि, ऐसा होने पर यह इस बात का संकेत नहीं है कि परमेश्वर उन बच्चों को उनके माता-पिता के पापों के कारण दण्डित कर रहा है, बल्कि इस बात का संकेत है कि लोग इतने बुरे हैं कि वे यह जानते हुए भी कि कुछ विशिष्ट पापों को करने से उनके बच्चे दुख उठाएंगे वे तब भी उन्हें करते रहते हैं। पवित्रशास्त्र से भी यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर एक व्यक्ति पर करुणा करते हुए अपने न्याय को संभवत: नहीं लाता कि वह बाद में इसके लिए उसकी योग्य संतान पर से डालेगा। इसी तरह से वह एक दुष्ट पीढ़ी पर उसे डालेगा। इसी तरह से वह एक दुष्ट पीढ़ी पर से अपने न्याय को रोके रहता है कि उसकी आगे की दण्ड के योग्य पीढ़ी पर अपने न्याय को लाएगा (देखें यिर्म. 16:11-12)। यह एक व्यक्ति को उसके पूर्वजों के पाप के कारण दण्डित करने से भिन्न है।

उसी तरह से करना है, जैसा करने को हमें पवित्रशास्त्र में बताया गया है (देखें 1 पत. 5:8-9)।

बाइबल में, केवल परमेश्वर के पास ही आशीष और शाप देने की सामर्थ है (देखें उत्पत्ति 3:17; 4:11; 5:29; 8:21; 12:3; गिनती 23:8; व्यवस्था. 11:26; 28:20; 29:27; 30:7; 2 इति. 34:24; भजन. 37:22; नीति. 3:33; 22:14; विलाप. 3:65; मलाकी 2:2; 4;6) दूसरे लोग हमें अपने मुँह से शाप दे सकते हैं, लेकिन उनके शाप हमें हानि पहुंचाने हेतु शक्तिहीन हैं।

> जैसे गौरिया घूमते-घूमते और सूपाबेनी उड़ते-उड़ते नहीं बैठती,
> वैसे ही व्यर्थ शाप नहीं पड़ता (नीति 26:2)।

बिलाम के पास इसका अधिकार था, इस्राएल की संतान को शाप देने के लिए बाला के कहने पर उसने कहा, ''परन्तु जिन्हें परमेश्वर ने शाप नहीं दिया उन्हें मैं क्यों शाप दू? और जिन्हें यहोवा ने धमकी नहीं दी उन्हें मैं कैसे धमकी दूं?'' (गिन. 23:8)।

कुछ मसीही मरकुस 11:23 में यीशु द्वारा कहे गए वचनों के आधार पर एक व्यक्ति के शाप को दूसरे व्यक्ति पर रखते हैं, ''मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई इस पहाड़ से कहे; कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन प्रतीति करे, कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिये वही होगा।''

तौभी, ध्यान दें केवल कथित शब्दों में कोई सामर्थ नहीं होती, बल्कि मन से विश्वास किये गए शब्दों में। एक व्यक्ति में किसी भी तरह से यह विश्वास नहीं हो सकता कि उसके द्वारा दूसरे व्यक्ति को दिया गया शाप उसे हानि पहुंचा सकता है, क्योंकि विश्वास एक दृढ़ भरोसा है, और विश्वास केवल परमेश्वर के वचन को सुनने से आता है (रोमि. 10:17)। व्यक्ति यह *आशा* कर सकता है कि उसके द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति को दिया शाप उसके जीवन में अवश्य ही दुर्भाग्य को लेकर आएगा, लेकिन वह इस पर *विश्वास* नहीं कर सकता, क्योंकि परमेश्वर ने शाप देनेवाले लोगों के विश्वास की आपूर्ति करने की प्रतिज्ञा नहीं की है।

इसका अपवाद केवल यही होगा कि यदि परमेश्वर किसी को ''विश्वास के वरदान'' के साथ-साथ ''भविष्यवाणी का वरदान, भी दे (आत्मा को नौ वरदानों में से दो), जिसे शाप या आशीष के रूप में बोला जाए, जैसा हम पुराने नियम के कुछ चरित्रों में पाते हैं (देखें उत्प. 27:27-29; 38-41; 49:1-27; यहोशू 6:26 1राजा 16:34; न्यायि. 9:7-20, 57; 2 राजा 2:23-24)। उन मामलों में भी शाप और आशीष का उद्‌भव *परमेश्वर* की ओर से हुआ था, न कि मनुष्य की ओर से। अत: एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को ''शाप दिए जाने'' का पूरा विचार

अंधविश्वास से भरा है। इसी कारण यीशु ने हमें ''हमारे विरोध में कहे जाने वाले शाप को तोड़ने'' का निर्देश नहीं दिया बल्कि इसके विपरीत ''हमें शाप देनेवालों को आशीष देने'' को कहा, हमें किसी भी व्यक्ति के शाप से भयभीत होने की ज़रूरत नहीं है। किसी के शाप से भयभीत होना परमेश्वर पर विश्वास की कमी को दिखाता है। दुर्भाग्यवश, मैं कई ऐसे पास्टरों से मिलता रहता हूं जिनका विश्वास परमेश्वर की सामर्थ से अधिक शैतान की शक्ति पर होता है। यद्यपि मैं प्रति माह शैतान के राज्य को नाश करते हुए भिन्न देशों की यात्रा करता हूं, तौभी, मुझे न तो शैतान से और न ही किसी और के द्वारा शाप दिये जाने का कोई भय होता है। डरने की कोई बात ही नहीं है।

जादू टोने के शाप?

Occult Curses?

भूतकाल में जादू टोने जैसी गतिविधियों से जुड़े रहने के कारण क्या हम पर शैतानी शाप का पाया जाना संभव हो सकता है?

हमें नहीं भूलना चाहिए कि नया जन्म पाने पर हम शैतान की सामर्थ और अंधकार के राज्य से छुड़ाए जाते हैं (देखें प्रेरित. 26:18; कुलु 1:13)। शैतान की तब तक हम पर कोई पकड़ नहीं हो सकती जब तक कि हम स्वयं उसे ऐसा करने का अधिकार न दें। यद्यपि बाइबल इस बात का संकेत देती है कि इफिसी मसीही अपने परिवर्तन से पूर्व बहुत अधिक जादू जैसी विधियों से जुड़े थे (देखें प्रेरित. 19:18-19), तौभी उनके नया जन्म पाने पर पौलुस द्वारा उन पर से ''शैतानी राज्यों'' के तोड़े जाने या शैतानी शक्तियों के बांधे जाने का कोई विवरण नहीं मिलता। इसका कारण केवल इतना है कि यीशु पर विश्वास लाने पर ही वे यंत्रवत् रूप से शैतान के प्रभुत्व से छूट गए थे।

इसके अतिरिक्त, जब पौलुस ने इफिसी मसीहियों को लिखा, उसने पीढ़ीगत या शैतानी शापों से स्वतंत्र होने के संबंध में कोई निर्देश नहीं दिया। और उसने उन्हें बताया कि ''शैतान को अवसर न दो'' (इफि. 4:27), और ''परमेश्वर के सारे हथियार पहन लो'' जिससे वे ''शैतान की सभी युक्तियों वे विरोध में खड़े हो सकें'' (इफि. 6:12)। प्रत्येक मसीही का भी यही उत्तरदायित्व है।

लेकिन, तौभी कुछ मामलों में कुछ मसीहियों की सहायता ''पीढ़ीगत'' या ''शैतानी शापों'' को तोड़ने के द्वारा की जाती है? संभव है कि सहायता पाने वाले व्यक्ति का यह विश्वास हो कि उस पर से एक बार ''शाप'' को तोड़े जाने के बाद शैतान उसे छोड़कर भाग जाएगा। विश्वास ही शैतान को भगाता है, और प्रत्येक मसीही को यह विश्वास करना चाहिए कि जब वह शैतान का सामना करेगा तो शैतान उसके

सामने से भाग जाएगा। शैतान को भगाने के लिये किसी भी ''छुटकारा देने वाले विशेषज्ञ'' को बुलाने की ज़रूरत नहीं है।

अंत में, बाइबल हमें बताती है कि मसीह ''हमारे लिए *शाप* बन गया'' और ऐसा करते हुए उसने ''हमें व्यवस्था के प्रत्येक *शाप* से छुड़ा लिया'' (गल. 3:13, पर बल दिया गया है)। हम सभी पहले पाप करने के कारण परमेश्वर के शाप के अधीन थे, परन्तु चूंकि यीशु ने हमारे दण्ड को अपने ऊपर ले लिया, हम उस शाप से छुड़ाए गए हैं। परमेश्वर की स्तुति हो। अब कोई शाप नहीं, हम आनिन्दत हो सकते हैं कि अब हम ''मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष से *आशीषित* हैं'' (इफि. 1:3)।

पवित्रशास्त्र का आत्मिक युद्ध
Scriptural Spiritual Warfare

आत्मिक युद्ध के संबंध में अब हम बहुत सी आधुनिक पुराण कथाओं से घिरे हुए हैं। लेकिन क्या पवित्रशास्त्र के अनुसार आत्मिक युद्ध का कोई रूप है? हां, और अब यही हमारा केन्द्र होगा।

आत्मिक युद्ध के बारे में हमें जिस पहली चीज़ को जानने की ज़रूरत है वह यह कि यह हमारे मसीही जीवन का केन्द्र और आज्ञापालन करना होना चाहिए, कि हम अधिक से अधिक उसके समान बनते जाएं। नये नियम के लेखों के बहुत कम प्रतिशत ही आत्मिक युद्ध के विषय को संबोधित करते हैं, जो हमें यह संकेत देता है कि मसीही जीवन में इसका स्थान निम्न होना चाहिए।

आत्मिक युद्ध के बारे में हमें जिस दूसरी चीज़ को जानने की ज़रूरत है वह यह कि बाइबल हमें वह बताती है जो हमारे लिए जानना ज़रूरी है। हमें ''शैतान की गहरी चीज़ों'' की कोई विशेष पहचान करने की ज़रूरत नहीं है (या उस प्रचारक की जो विशेष पहचान रखने का दावा करता है)। बाइबल का आत्मिक युद्ध बहुत सरल है। शैतान की युक्तियों को बाइबल में स्पष्ट रूप से प्रगट किया गया है। हमारे उत्तरदायित्वों को सीधे रूप में रेखांकित किया गया है। परमेश्वर जो कहता है उस पर एक बार आपके जानने पर विश्वास करने के बाद आप निश्चय ही इस आत्मिक युद्ध में विजयी होंगे।

आरम्भ की ओर जाना
Back to the Beginning

आइये उत्पत्ति की पुस्तक की ओर लौटें, जहां हमें सबसे पहले शैतान का परिचय दिया गया था। वहां पहले अध्याय में, शैतान सांप के रूप में प्रगट होता है। यदि शैतान

के सांप होने पर कोई संदेह हो तो प्रकाशितवाक्य 20:2 उसे हटा देता है: ''और उसने उस अजगर, अर्थात् *पुराने सांप* को, जो इबलीस और शैतान है'' (पर बल दिया गया है)।

उत्पत्ति 3:1 हमें बताता है, ''यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था।'' जब आप परमेश्वर की कुछ रचनाओं के बारे में यह सोचते हैं कि वे कितनी धूर्तता से अपने शिकार को पकड़ते हैं तो आपको यह सोचना चाहिए कि फिर शैतान कितना धूर्त होगा। दूसरी ओर, शैतान परमेश्वर के समान सर्वज्ञानी या बुद्धिमान नहीं है, और हमें यह नहीं समझ लेना चाहिए कि मानसिक रूप में हम उससे आगे हैं। यीशु ने हमें ''*सांप* के समान बुद्धिमान'' बनने का निर्देश दिया है। (मत्ती. 10:16, पर बल दिया गया है)। पौलुस ने शैतान की युक्तियों से अज्ञात न होने का दावा किया (देखें 2 कुरि. 2:11) और यह कि ''हममें मसीह का मन'' है (1कुरि. 2:16)।

शैतान ने हव्वा से उस बारे में प्रश्न करते हुए जो परमेश्वर ने कहा था, उस पर अपना पहला अग्निमय बाण फेंका। उसका (हव्वा का) जवाब ही उस पर यह प्रकट करता कि क्या वह हव्वा को परमेश्वर से अनाज्ञाकारिता करने को छल सकता है। *परमेश्वर द्वारा कही गई बातों पर विश्वास करनेवालों और आज्ञापालन करनेवालों के साथ छल करने का शैतान के पास कोई मार्ग नहीं है, इसी कारण उसकी समस्त रणनीति परमेश्वर के वचन के विरोध में रहनेवाले विचारों के इर्द गिर्द घूमती रहती है।*

शैतान ने हव्वा से पूछा, ''क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, कि ''तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?'' (उत्प. 3:1)। यह एक औपचारिक रूप से जांच करनेवाले की ओर से पूछा गया सरल सा प्रश्न लगता है, लेकिन शैतान अपने लक्ष्य के बारे में ठीक-ठीक जानता था।

हव्वा ने जवाब दिया, ''इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं। पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे'' (उत्पत्ति 3:2-3)।

हव्वा ने लगभग सही ही कहा था। लेकिन परमेश्वर ने उन्हें भले बुरे के ज्ञान के वृक्ष को छूने को कभी मना नहीं किया था, बल्कि केवल उन्हें इस वृक्ष के फल को खाने को मना किया था।

हव्वा शैतान के इस झूठ की पहचान करने का प्रर्याप्त सत्य से परिचित थी: ''तुम निश्चय न मरोगे'' (उत्प. 3:4)। बेशक, परमेश्वर ने जो कहा था, यह स्पष्ट रूप में उसके प्रतिकूल था, और हव्वा का इस पर विश्वास करना की अनुपयुक्त होता। इसी कारण शैतान ने अपने झूठ पर सत्य की चादर को लपेटा, जैसा वह अक्सर करता है ताकि उसके झूठ को स्वीकार कर लिया जाए कि ''वरन् परमेश्वर आप जानता

है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे'' (उत्प. 3:5)।

शैतान ने अपने झूठ के बाद तीन सत्य चीज़ों को कहा। हम जानते हैं कि आदम और हव्वा के एक बार वर्जित फल खाने के बाद उनकी आंखें खुल गई थीं (उत्प. 3:7), जैसा शैतान ने कहा था। इसके बाद परमेश्वर ने स्वयं कहा कि मनुष्य परमेश्वर के समान *हो गया* है और उसे भले व बुरे का ज्ञान *हो गया* है (देखें उत्प. 3:22)। इस पर ध्यान दें: *शैतान लोगों को धोखा देने के लिये प्राय: सत्य के साथ भ्रम को मिलाता है।*

इस पर भी ध्यान दें कि शैतान ने परमेश्वर के चरित्र को नष्ट कर दिया था। परमेश्वर ने नहीं चाहा था कि आदम और हव्वा अपनी खुशी और भलाई के लिये उस वर्जित फल में से खाएं, परन्तु शैतान ने कुछ ऐसा सुनाया कि परमेश्वर उनसे किसी भली चीज़ को रोक रहा है। शैतान का झूठ परमेश्वर के चरित्र को दूषित करता है।

दुर्भाग्यवश, पृथ्वी के प्रथम दम्पत्ति ने झूठ पर विश्वास करने के लिए सत्य को ठुकरा दिया और उसका परिणाम भी उन्हें भुगतना पड़ा। लेकिन उनकी कहानी में आधुनिक आत्मिक युद्ध के सभी तत्वों पर भी ध्यान दें: शैतान का एकमात्र हथियार सत्य का आवरण चढ़ा हुआ झूठ है। परमेश्वर ने जो कहा तथा शैतान ने जो कहा, मनुष्य को उस पर विश्वास करने का चुनाव करना था। सत्य पर विश्वास करने पर वह उनके, ''विश्वास की ढाल'' बन सकता था लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया।

यीशु का आत्मिक युद्ध
Jesus' Spiritual Warfare

जंगल में शैतान के साथ यीशु का परीक्षा से सामना करते हुए, पढ़ने पर हम देख पाते हैं कि हज़ारों वर्ष के बाद भी शैतान ने अपनी मंशा को नहीं बदला है। हमला करने का उसका उद्देश्य परमेश्वर द्वारा कहीं गई बातों को श्रेय न देने का था, क्योंकि वह जानता था कि वह अपने शत्रु को सत्य पर विश्वास करने और आज्ञापालन करने से रोकते हुए परास्त कर सकता था। *परमेश्वर का वचन पुन: युद्ध के केन्द्र में है।* शैतान ने अपने झूठ की बौछार की, और यीशु ने सत्य के द्वारा उन्हें मोड़ दिया। यीशु ने उस पर विश्वास व आज्ञा का पालन किया जो कुछ परमेश्वर ने कहा। यही बाइबल का आत्मिक युद्ध है।

यीशु ने भी उसी स्थिति का सामना किया जिसका सामना आदम हव्वा ने किया और हम भी करते हैं। उसने इस बात का निर्णय लिया कि वह परमेश्वर की सुनेगा या शैतान की। उसका आत्मिक युद्ध ''आत्मा की तलवार'' परमेश्वर के वचन के साथ है। आइये देखें कि शैतान के साथ आत्मिक युद्ध से हम क्या सीख सकते हैं।

यीशु की दूसरी परीक्षा को स्मरण करते हुए मत्ती हमें बताता है:

> तब इबलीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया। और उससे कहा, ''यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दें; क्योंकि लिखा है, कि ''वो तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा; और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांव में पत्थर से ठेस लगे'।'' यीशु ने उससे कहा, ''यह भी लिखा है कि 'तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर'' (मत्ती 4:5-7)।

यहां मुख्य विषय फिर से यह है कि परमेश्वर ने क्या कहा। शैतान ने बेशक इक्यानवे भजन से उद्धृत किया था, लेकिन उसने उसे इस तरह से घुमा कर कहने का प्रयास किया था जो परमेश्वर की मंशा में नहीं था।

यीशु ने पवित्रशास्त्र के पद को उद्धृत करते हुए जवाब दिया जो भजन 91 में परमेश्वर द्वारा दी गई प्रतिज्ञा को संतुलित रूप से समझने में सुरक्षा देता है। परमेश्वर हमें बचाएगा, लेकिन यदि हम मूर्खतापूर्ण कार्य करते रहें, तो नहीं, अर्थात् ''उसकी परीक्षा करते हुए''।

इसी कारण यह बहुत ज़रूरी हो जाता है कि हम बाइबल के पदों को उनके संदर्भ से अधिक विस्तृत न करें। प्रत्येक पद इससे संतुलित होना चाहिए कि शेष बाइबल इस बारे में क्या कहती है।

पवित्रशास्त्र के पदों को घुमाना शैतान की आत्मिक युद्ध में एक सामान्य रणनीति है, और दुख की बात है कि वह उन बहुत से मसीहियों के विरुद्ध इस रणनीति का सफलतापूर्वक प्रयोग कर रहा है जो आधुनिक आत्मिक युद्ध के आन्दोलन में लिप्त हैं। बाइबल के वाक्यांश ''दृढ़ गढ़ों को ढाना'' को घुमाने का एक श्रेष्ठ उदाहरण वातावरण में से दुष्टात्माओं को निकालने की विचारधारा का समर्थन करने पर मिलता है। जैसा इस विशिष्ट पद के बारे में मैंने पहले भी बताया कि वातावरण में से दुष्टात्माओं को निकालने में इसका कोई कार्य नहीं है। तौभी, शैतान चाहता है कि हम इस तरह का विचार रखें। अत: हम आकाश की शक्तियों पर चिल्लाते हुए अपने समय को बर्बाद कर सकते हैं।

यीशु की तीसरी परीक्षा के मत्ती के विवरण में हम पढ़ते हैं:

> फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर उससे कहा कि, ''यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।'' तब यीशु ने उससे कहा; ''है शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है कि 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर'' (मत्ती 4:8-10)।

यह सामर्थ के लिए एक परीक्षा थी। यदि यीशु ने शैतान की आराधना की होती और यदि शैतान ने उसके लिए अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया होता, तो यीशु अंधकार के राज्य पर शासन करने वाला दूसरा अधिकारी हो जाता। तब उसका प्रत्येक न बचाए गए व्यक्ति और प्रत्येक बुरी आत्मा पर अधिकार होता, वह अधिकार जो पहले केवल शैतान का था। हम केवल अपने सपनों में ही इसकी कल्पना कर सकते हैं।

पुन: ध्यान दें कि यीशु ने शैतान का सुझाव का सामना परमेश्वर के लिखित वचन से किया। इन तीनों परीक्षाओं में से प्रत्येक पर यीशु यह कहते हुए विजयी हुआ ''ऐसा लिखा है।'' यदि हम शैतान द्वारा धोखा दिये जाने या उसके जाल में फंसने से बचना चाहते हैं तो हमें भी परमेश्वर के वचन को जानना व उस पर विश्वास करना चाहिए। आत्मिक युद्ध के बारे में केवल इतना ही है।

युद्ध भूमि
The Battle Ground

शैतान और उसकी दुष्टात्माओं के पास लोगों के मन और मस्तिष्क में विचार डालने की शक्ति अधिक है (और बेशक इसे परमेश्वर द्वारा सीमित भी किया गया है; (देखें 1कुरि. 10:13)। आइये मन में इस विचार के साथ, निम्नलिखित पदों पर विचार करें:

> परन्तु पतरस ने कहा, ''हे हनन्याह! *शैतान ने तेरे मन में यह बातें क्यों डाली हैं कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े?''* (प्रेरित. 5:3, पर बल दिया गया है)।
>
> और जब *शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था, कि उसे पकड़वाए,* तो भोजन के समय– (यूह. 13:2, पर बल दिया गया है)।
>
> परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आनेवाले समयों में कितने लोग *भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्ट आत्माओं* की शिक्षा पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे (1तीमु. 4:1, पर बल दिया गया है)।
>
> परन्तु मैं डरता हूं कि *जैसे सांप ने अपनी चतुराई से* हव्वा को बहकाया, वैसे ही *तुम्हारे मन* उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं *भ्रष्ट न किये जाएं* (2कुरि. 11:3, पर बल दिया गया है)।
>
> तुम एक दूसरे से अलग न रहो, परन्तु केवल कुछ समय तक आपस की सम्मति से कि प्रार्थना के लिये अवकाश मिले, और फिर एक

> साथ रहो, ऐसा न हो, कि तुम्हारे असंयम के कारण *शैतान तुम्हें परखे* (1कुरि. 7:5, पर बल दिया गया है)।
>
> इस कारण जब मुझसे और न रहा गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिये भेजा, कि कहीं ऐसा न हो, कि *परीक्षा करने वाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो,* और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो (1थिस्स. 3:5, पर बल दिया गया है)।
>
> *और उन अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है,* ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके (2कुरि. 4:4, पर बल दिया गया है)।
>
> और वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुराना सांप, जो इबलीस और शैतान कहलाता है, और *सारे संसार का भरमानेवाला है,* पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिये गए (प्रका. 12:9, पर बल दिया गया है)।
>
> तुम अपने पिता, शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और *सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं, जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूठ का पिता है* (यूह. 8:44, पर बल दिया गया है)।

ये पद तथा अन्य इस बात को स्पष्ट करते हैं कि बाइबल के आत्मिक युद्ध में प्राथमिक युद्ध भूमि हमारे मन और मस्तिष्क हैं। शैतान इन विचारों के साथ प्रहार करता है– बुरे सुझाव, गलत विचार, झूठी परिकल्पनाएं, परीक्षा और कई तरह के झूठ इत्यादि। हमारे बचाव के माध्यम-जानना, विश्वास करना और इस पर कार्य करना है।

आपके लिए यह समझना बहुत ज़रूरी है कि आपके मन में आनेवाला प्रत्येक विचार आपसे ही निकला है। शैतान के पास ऐसे बहुत से वक्ता हैं जो लोगों के मनों में गलत विचारों को डालने में सहायता करते हैं। वह समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, टेलीविज़न, पुस्तकों, रेडियो, मित्रों और पड़ोसियों द्वारा और प्रचारकों द्वारा भी हमें प्रभावित करने के कार्य करता है। यहां तक कि एक बार पतरस का प्रयोग भी शैतान के वक्ता के रूप में किया गया था, यीशु को यह सुझाव देने में कि उसका मारा जाना परमेश्वर की इच्छा में नहीं था (देखें मत्ती 16:23)।

लेकिन शैतान और दुष्टात्माएं किसी भी मानव मध्यस्थ के बिना भी प्रत्यक्ष रूप से मानव मनों में कार्य करते हैं, और सभी मसीही कई बार स्वयं को इस दशा में पाते हैं। यही से युद्ध का आरम्भ होता है।

मुझे एक प्रिय मसीही महिला स्मरण है जो अपनी समस्या का अंगीकार करने एक बार मेरे पास आई थीं। उसने बताया था कि जब भी वह प्रार्थना करती है तब वह निन्दा के विचार और दूषित विचार अपने मन में पाती है। वह मेरी कलीसिया की सबसे प्यारी भयंकर विचारों की महिला थी।

मैंने उसे बताया कि इन विचारों की उत्पत्ति उसके मन में नहीं हुई है, बल्कि उस पर शैतान का हमला किया गया था, जो उसके प्रार्थना जीवन को नाश करने का प्रयास कर रहा था। उसने मुझे बताया कि उसने इसी कारण प्रतिदिन प्रार्थना करना बन्द कर दिया था क्योंकि उसे इस बात का भय था कि उसके प्रार्थना करने पर फिर से बुरे विचार आएंगे। शैतान सफल हो गया था।

इसलिये मैंने उससे फिर से प्रार्थना करना आरम्भ करने को कहा, और यह भी कि निन्दा के विचार आने पर वह उनका सामना परमेश्वर के वचन के सत्य से करे। यदि कोई विचार उससे कहे कि यीशु केवल एक था– तो उसे कहना चाहिए, ''नहीं, यीशु परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र था।'' यदि यह विचार आए कि वह वचन झूठा था, तो वह यीशु की स्तुति करने वाले विचारों को उस विचार के स्थान पर ले आए।

मैंने उसे यह भी बताया कि डरते हुए वह और भी गलत विचार सोच सकती है। वह वास्तव में ऐसे विचारों को आमंत्रित कर रही थी, क्योंकि भय विश्वास के प्रतिकूल है। कुछ ऐसा न सोचने को हम कुछ और विचार करने का प्रयास कर सकते हैं।

उदाहरण के लिये, यदि मैं आपसे कहूं, ''अपने दाहिने हाथ के बारे में न सोचें'', तो मेरी आज्ञा का पालन करने के प्रयास में आप उसी क्षण दाहिने हाथ के बारे में सोचना आरंभ कर देंगे। जितना अधिक आप प्रयास करेंगे, दशा उतनी ही बुरी होती जाएगी। अपने दाहिने हाथ के बारे में न सोचने का तरीका किसी और चीज़ के बारे में सोचना है, उदाहरण के लिये, आपके जूते। एक बार अपने जूतों के बारे में विचार करने पर आप अपने दाहिने हाथ के बारे में नहीं सोचेंगे।

मैंने उस प्रिय स्त्री से ''भयभीत न होने'' को कहा, जैसी आज्ञा हमें बाइबल भी देती है। और जब कभी भी उसके मन में परमेश्वर के वचन के प्रतिकूल विचार आते तो वह उनके स्थान पर परमेश्वर के वचन को रख देती।

मुझे यह बताते हुए खुशी है कि उसने मेरी सलाह को माना और उसके प्रार्थना के समय में कई बार हमला किये जाने के पश्चात् भी उसने अपनी समस्या पर पूरी विजय पाई। वह बाइबल के आत्मिक युद्ध में विजयी रही।

कई कलीसियाओं का सर्वेक्षण करते हुए मेरे लिये यह जानना रोचक रहा है कि उनकी समस्या बहुत सामान्य थी। मेरे द्वारा निरीक्षण किये गए आधे मसीहियों ने बताया कि प्रार्थना करते समय उनमें निन्दा के विचार आते हैं। शैतान इतना वास्तविक नहीं है।

''जो आप सुनते है उसके प्रति सावधान रहें''

"Take Care What You Listen To"

हम शैतान और दुष्टात्माओं को हमारे मनों पर हमला करने से रोक नहीं सकते हैं, लेकिन हमें *उनके* विचारों को *अपने* विचार नहीं बनने देना। अर्थात् हमें शैतानी विचारों को अपने में वास नहीं करने देना। क्योंकि ऐसा कहा जाता है, ''आप चिड़ियों को अपने सिर पर उड़ने से नहीं रोक सकते लेकिन आप उन्हें अपने बालों में घोंसला बनाने से तो रोक सकते हैं।''

इसके अतिरिक्त, हमें हमारे मनों को दुष्ट प्रभावों का गढ़ बनाने के प्रति सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि यह हमारे नियंत्रण में है। टेलीविज़न के आगे एक घण्टा बैठते हुए या समाचार पत्र को पढ़ते हुए हम शैतानी विचारों को हमें प्रभावित करने का अवसर देते हैं। बीज बोने वाले का दृष्टांत सुनाने के एकदम बाद यीशु ने चेतावनी दी, ''चौकस रहो कि क्या सुनते हो'' (मर. 4:24)। यीशु झूठ को सुनने के विनाशकारी प्रभाव को जानता था कि यह शैतान को हमारे मन और मस्तिष्क में ''बीज'' बोने की अनुमति देना है। वे बीज ''कांटों और झाड़ियों'' के रूप में बढ़ेंगे और हमारे जीवनों से परमेश्वर के वचन को रोक देंगे (देखें मर. 4:7, 18-19)।

आत्मिक युद्ध में पतरस

Peter on Spiritual Warfare

प्रेरित पतरस बाइबल के वास्तविक आत्मिक युद्ध को समझ गया था। उसने अपनी पत्रियों में कभी भी मसीहियों को नगर पर से प्रधानताओं और अधिकारों को गिराने का निर्देश नहीं दिया। इसके विपरीत, उसने उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवनों में शैतान के हमलों का सामना करने को कहा, और उन्हें यह भी बताया कि उन्हें कैसे सामना करना चाहिए।

> सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गरजने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ होकर और यह जानकर उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं ऐसे ही दुख भोग रहे हैं (1पत. 5:8-9)।

सर्वप्रथम, इस पर भी ध्यान दें कि पतरस ने हमारी दशा को बचाव के रूप में इंगित किया है, न कि आक्रमण के रूप में। शैतान चारों ओर खोजता फिर रहा है, हम नहीं। वह हमारी तलाश में है; हम उसकी तलाश में नहीं हैं। हमारा कार्य हमला करने का नहीं बल्कि बचाव करने का है।

दूसरा, ध्यान दें कि शैतान एक गरजनेवाले सिंह के समान किसी को *खा जाने*

के लिए ढूंढ रहा है। मसीहियों को खा जाना कैसे संभव हो सकता है? क्या पतरस यह कहना चाहता था कि शैतान एक शेर के समान उनके मांस को खा जाएगा? बेशक नहीं। शैतान केवल जिस तरीके से मसीही को खा सकता है वह उसको उस झूठ पर विश्वास दिलाते हुए धोखा देना है जो उसके विश्वास को नष्ट कर देता है।

तीसरा, ध्यान दें कि पतरस हमें हमारे विश्वास के द्वारा शैतान का सामना करने को कहता है। हमारा संघर्ष एक भौतिक युद्ध नहीं है, और हम हवा में अपने घूंसे मारते हुए शैतान से लड़ नहीं सकते। वह हम पर झूठ के साथ हमला करता है, और हम परमेश्वर के वचन में अपने विश्वास पर दृढ़ बने रहते हुए उसका सामना कर सकते हैं। यह, पुनः पवित्रशास्त्र का आत्मिक युद्ध है।

जिन मसीहियों को परतस लिख रहा था वे गंभीर दुख झेल रहे थे, और मसीह में अपने विश्वास की घोषणा किये जाने के कारण उनकी परीक्षा हो रही थी। हमारे बुरी परिस्थितियों में होने पर शैतान अक्सर हम पर संदेह और झूठ के साथ हमला करता है। यह आपके विश्वास में दृढ़ बने रहने का समय है। पौलुस के अनुसार ये वे ''बुरे दिन'' हैं जब आपको परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लेने की ज़रूरत है कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने *खड़े रहे सको* (इफि. 6:11, पर बल दिया गया है)।

आत्मिक युद्ध में याकूब
James on Spiritual Warfare

प्रेरित याकूब ने भी अपनी पत्री में आत्मिक युद्ध के बारे में कुछ बताया है। क्या उसने मसीहियों को यह बताया कि उनकी प्रार्थनाएं स्वर्गदूतों के युद्ध का परिणाम निर्धारित कर सकती हैं? नहीं! क्या उसने उन्हें अपने नगरों पर से लालसा, निराशा, और नशे की आत्माओं को निकालने को कहा? नहीं! क्या उसने उन्हें नगरों के इतिहास का अध्ययन करने को कहा जिससे वे यह जान सकें कि आरम्भ से ही वहां किस तरह की दुष्टात्माएं रही थीं? नहीं!

याकूब ने पवित्रशास्त्र के आत्मिक युद्ध पर विश्वास करते हुए लिखा:

> इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा (याकूब 4:7)।

एक बार पुनः कि मसीह की यह अवस्था बचाव करनेवाली है हमें सामना करना है, न कि हमला। हमारे ऐसा करने पर याकूब प्रतिज्ञा करता है कि शैतान भाग निकलेगा। वह ऐसे मसीही से चिपका नहीं रहता जो उसके झूठ और उसके सुझावों पर भरोसा नहीं करता, और न ही उसकी परीक्षा में पड़ता है।

इस पर भी ध्यान दें कि याकूब ने सबसे पहले परमेश्वर के प्रति समर्पित होने

का निर्देश दिया। हमें सर्वप्रथम परमेश्वर के वचन के प्रति समर्पित होते हुए तत्पश्चात् उसके प्रति समर्पित होना है। शैतान के विरुद्ध हमारा सामना किया जाना परमेश्वर के वचन के प्रति हमारे समर्पण पर निर्भर करता है।

आत्मिक युद्ध में यूहन्ना
John on Spiritual Warfare

प्रेरित यूहन्ना ने अपनी पहली पत्री में आत्मिक युद्ध के बारे में भी लिखा। शैतानी गढ़ों को ढाने के लिये क्या उसने हमसे ऊँचे स्थानों पर जाने को कहा है? नहीं! क्या उसने हमें यह बताया है कि क्रोधित रहनेवाले मसीहियों में से क्रोध की दुष्टात्मा को कैसे निकालें? नहीं!

इसके विपरीत यूहन्ना ने पतरस और याकूब के समान केवल बाइबल के आत्मिक युद्ध पर विश्वास किया और इसी कारण उसके निर्देश भी समान ही हैं:

> हे प्रियो, प्रत्येक आत्मा की प्रतीति न करो; वरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं। परमेश्वर का आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो, कि जो कोई आत्मा मान लेती है कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है। और जो कोई आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं; और वही तो मसीह के विरोधी की आत्मा है; जिस की चर्चा तुम सुन चुके हो, कि वह आनेवाला है; और अब भी जगत में है। हे बालको, तुम परमेश्वर के हो; और तुम ने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है; वह उससे जो संसार में है, बड़ा है। वे संसार के हैं, इस कारण वे संसार की बातें बोलते हैं; और संसार उनकी सुनता है। हम परमेश्वर के हैं; जो परमेश्वर को जानता है वह हमारी सुनता है; जो परमेश्वर को नहीं जानता वह हमारी नहीं सुनता; इसी प्रकार हम सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा को पहचान लेते हैं (1यूहन्ना 4:1-6)।

ध्यान दें कि इन पदों में यूहन्ना का समस्त विचार-विमर्श शैतान के झूठ और परमेश्वर के सत्य के चारों ओर घूमता रहता है। हमें आत्माओं को परखना है कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं और परख सत्य के आधार पर हो। दुष्टात्माएं स्वीकार नहीं करेंगी कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है। वे झूठी हैं।

यूहन्ना ने हमें यह भी बताया कि हमने दुष्टात्माओं पर जय पाई है। अर्थात्, ज्योति के राज्य के नागरिक होने के कारण हम पर अब उनका अधिकार नहीं है। महान

यीशु हममें वास करता है। जिन लोगों में मसीह वास करता है उन्हें दुष्टात्माओं से डरना नहीं चाहिए।

यूहन्ना ने यह भी कहा कि संसार दुष्टात्माओं की सुनता है, जो इस बात का संकेत देता है कि वे दुष्टत्माएं बोलने वाली होंगी। हम जानते हैं कि वे सत्य रूप में नहीं बोलतीं बल्कि लोगों के मनों में झूठ को रोपती हैं।

मसीह के अनुयायी होने के कारण, हमें दुष्टात्माओं के झूठ को सुनने वाला नहीं होना चाहिए, और यूहन्ना कहता है कि परमेश्वर को जाननेवाले हमारी सुनते हैं, क्योंकि हमारे पास सत्य है; हमारे पास परमेश्वर का वचन है।

पुन:, ध्यान दें कि शैतान की नीति लोगों को उसके झूठ पर विश्वास कराने की होती है। यदि हम सत्य को जानते और उस पर विश्वास करते हैं तो शैतान हमें हरा नहीं सकता। पवित्रशास्त्र के आत्मिक युद्ध के बारे में यही सब कुछ है।

कुंजी विश्वास है

Faith is the Key

आत्मिक युद्ध में विजयी होने के लिए परमेश्वर के वचन को जानना ही पर्याप्त नहीं है। कुंजी *सच में उस पर विश्वास करना* है जो परमेश्वर ने कहा। शैतान का सामना करने और दुष्टात्माओं को निकालने में भी यही सत्य है। उदाहरण के लिये, पहले हमने जिसकी जांच की थी उसी उदाहरण पर विचार करें, जब यीशु ने अपने बारह शिष्यों को ''अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें'' (मत्ती 10:1)। हम उन्हें सात अध्याय पश्चात् एक मिर्गी पड़ने वाले लड़के में से दुष्टात्मा को निकालने में असमर्थ पाते हैं उनकी असफलता के विषय में जानकर यीशु ने विलाप किया:

> हे *अविश्वासी* और हठीले लोगों, में कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा?
> कब तक तुम्हारी सहूंगा?'' (मत्ती 17:17, पर बल दिया गया है)।

उनके अविश्वास के कारण यीशु को दुख हुआ। इसके अतिरिक्त, जब उसके शिष्यों ने बाद में उससे पूछा कि वे उसमें से दुष्टात्मा को क्यों नहीं निकाल पाए, यीशु ने जवाब दिया, ''अपने विश्वास की घटी के कारण'' (मत्ती 17:20)। उनका अधिकार विश्वास से अलग होकर कार्य नहीं कर पाया।

दुष्टात्माओं को निकालने और शैतान का सामना करने की हमारी सफलता परमेश्वर के वचन पर हमारे विश्वास पर निर्भर करती है। जो परमेश्वर ने कहा यदि हम सच में उस पर विश्वास करें तब हम उसी के अनुसार बोलेंगे और कार्य करेंगे। कुत्ते उन्हीं का पीछा करते हैं जो उनसे डर कर दौड़ते हैं, और शैतान के साथ भी ऐसा ही है। यदि आप दौड़ते हैं, तो शैतान आपका पीछा करेगा। यदि आप अपने विश्वास में स्थिर रहें, तो शैतान आपको छोड़कर भाग निकलेगा (देखें याकू. 4:7)।

इसमें संदेह नहीं कि प्रेरितों के विश्वास की कमी को किसी ने तो देखा होगा जब वे प्रयास करने पर भी लड़के में से दुष्टात्मा को निकालने में असफल रहे, यदि उस दुष्टात्मा ने वैसा ही प्रदर्शन उनके सामने किया होता जैसा उसने यीशु के सामने किया था, लड़के को ''पटक कर मरोड़ा'' (लूका 9:42), जिसके कारण वह मुंह में फेन भर लाता था (मर. 9:20), यह संभव है कि शिष्यों का विश्वास भय में बदल जाता। जो कुछ उन्होंने देखा था, वे संभवत: उससे अपंग के समान हो जाते।

तौभी, विश्वास करनेवाला जो देखता है उससे नहीं चलता, बल्कि वह केवल उससे चलता है जो कुछ परमेश्वर ने कहा है, ''*हम रूप को देखकर नहीं,* पर विश्वास से चलते हैं'' (2 कुरि, 5.7, पर बल दिया गया है)। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता (देखें तीतु. 1:2) और चाहे हमारी परिस्थितियां उसके विपरीत प्रतीत हों जो कुछ परमेश्वर ने कहा, हमें विश्वास में स्थिर बने रहना चाहिए।

ध्यान दें कि यीशु ने कुछ ही क्षण में लड़के को छुटकारा दे दिया था। उसने ऐसा विश्वास से किया था। उसने ''छुटकारे के सत्र'' का संचालन करते हुए समय बर्बाद नहीं किया था। जिनका अपने परमेश्वर प्रदत्त विश्वास में अधिकार नहीं है, उन्हें दुष्टात्मा को निकालने में समय नहीं गंवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, इसका कोई विवरण नहीं मिलता कि दुष्टात्मा पर चिल्लाना ज़रूरी है। विश्वास रखनेवालों को चिल्लाने की ज़रूरत नहीं है। न ही यीशु ने दुष्टात्मा को बार-बार बाहर निकलने को कहा। एक बार की आज्ञा ही पर्याप्त थी। दूसरी आज्ञा संदेह को प्रगट करती है।

सारांश में

In Summary

शिष्य-निर्माता सेवक बाइबल के आत्मिक युद्ध के बारे में अपने उदाहरण और अपने शब्दों के द्वारा सिखाता है जिससे उसके शिष्य शैतान की युक्तियों के विरुद्ध खड़े होने के योग्य हो जाते हैं तथा मसीह की आज्ञाओं की आज्ञाकारिता में चलते हैं। वह अपने शिष्यों का नेतृत्व वर्तमान ''सिद्धान्तों की हवा'' में नहीं करता जो आत्मिक युद्ध की गैर बाइबल संबंधी नीतियों को बढ़ावा देते हैं, यह जानते हुए कि इस तरह की विधियों पर कार्य करने वालों का केन्द्र गलत है और वास्तव में वे शैतान से धोखा खाए हुए हैं।